होने पर उसका पुत्र जोज़ेफ़ प्रथम राज्यासन पर बैठा। तदनन्तर उसके भाई चार्ल्स षष्ठ के हाथ में अधिकार आया।

रईस लोग सर्वसाधारण को बहुत पीड़ित करते थे। वह लोग लगान देते देते व्याकुल थे। रईसों का सब रुपया दिखावट, बनावट और व्यर्थ के कामों में ख़र्च होता था। रेशमी कपड़ों का बड़ा रिवाज था। मकान और गिर्जाघर ख़ूब बन रहे थे। संगीतशास्त्र भी बड़ी उन्नति पर था।

१७—मैरिया थेरेसा।

अपने पिता चार्ल्स षष्ठ के जीवनकाल ही में मैरिया थेरेसा 'आस्ट्रिया' की महारानी हो चुकी थी। सब राजशक्तियों की सलाह से चार्ल्स ने 'प्रैग्मेटिक सैंक्शन' नामक एक दानपत्र लिखा था जिससे कि उसकी पुत्री मैरिया थेरेसा जर्मन-राजत्व की उत्तराधिकारिणी निश्चित कर दी गई थी। १७४० में चार्ल्स का देहान्त होने पर मैरिया के पति लोरेन के फ़्रैंसिस ने बोहेमिया, हंगरी और आस्ट्रिया-मुल्क पर अपना अधिकार जमाया। बवेरिया के निर्वाचक को चार्ल्स सप्तम की उपाधि देकर राज्यासन पर बिठाया। अपना राज्य बढ़ाने की इच्छा से प्रशिया के राजा फ़्रेडरिक द्वितीय ने मैरिया से लड़ना शुरू किया। जर्मनी के अनेक रईस और ताल्लुक़ेदार तथा निर्वाचक उसके विरुद्ध हो गये और संग्राम अवश्यम्भावी था। इस समय मैरिया बड़ी विपत्ति में थी।

मैरिया थेरेसा जर्मन-इतिहास में अपनी महानुभावता और चतुरता के लिए बहुत विख्यात है। वह बड़ी शिष्ट महारानी थी। उसकी प्रजा बड़े भक्तिभाव से उसके साथ बर्ताव करती थी। यह देख कर कि समस्त जर्मनी लड़ने पर तैयार है, मैरिया अपने अल्प-वयस्क राजकुमार को लेकर प्रेग को गई और वहाँ की महासभा से सहायता के लिए विनय किया। वे लोग महारानी की शिष्टता से प्रोत्साहित होकर जर्मन लोगों के विरुद्ध आ डटे। इँग्लैंड ने भी मैरिया की सहायता करने का वचन दिया। ये सब अपनी महारानी मैरिया के लिए ख़ूब लड़े और प्रतिपक्षियों की सेना को अनेक बार हराया। निस्तार न देख कर प्रशिया के राजा ने मैरिया से सन्धि करली, जिसके द्वारा 'सिलेसिया' नामक सूबे का अधिकांश फ़्रेडरिक को मिल गया। लड़ाई अभी तक शान्त नहीं हुई थी। लड़ते लड़ते व्याकुल हो जाने पर १७४८ में ए स्थान पर सन्धि-पत्र लिखा गया। इसके अनुकूल मैरिया थेरेसा के दो सूबे जाते रहे। चार्ल्स सप्तम की मृत्यु होने पर मैरिया का पति फ़्रांसिस प्रथम जर्मनी का महाराज हुआ, और गत महाराज के पुत्र मैक्स-मिलान को बवेरिया की निर्वाचकता फिर मिल गई। फ़्रांसिस ने १७८० तक राज्य किया।

१८—प्रशिया और फ़्रेडरिक दि ग्रेट।

(१७४०—१७८६)

इस विषय का उल्लेख ऊपर हो चुका है कि ब्रैन्डेन बर्ग के निर्वा-

चक को महाराज लेओपल्ड ने 'प्रशिया के राजा' को उपाधि देदी थीं। उसी काल से यह प्रशिया का राजवंश विख्यात हुआ। वर्तमान जर्मनी की छोटी छोटी रियासतों में प्रशिया के ही राजा सबसे बलवान् थे। शनैः शनैः ये लोग उन्नति करते चले आये। यहां की प्रजा बहुत प्रसन्न रहती थी और राज्यप्रबन्ध बहुत अच्छा था। प्रशिया के फ्रेडरिक तथा मैरिया थेरेसा से 'सिलेसिया' सूबे के विवाद के कारण तीन बार लड़ाई हुई। अन्त में तीसरी लड़ाई १७५६ से १७६३ तक हुई, इसमें इंगलैंड ने फ्रेडरिक को अच्छी सहायता दी। प्रशिया के राजा ने जर्मनी के महाराज की बड़ी सेना को कई बार हराया, और उनका राज्य पूर्ववत् स्थिर रहा।

इस शताब्दी के प्रारम्भ में फ्रेडरिक द्वितीय प्रशिया के राजाओं में बडा विख्यात हो गया है। अपने उत्तम उत्तम संशोधनों तथा अच्छे प्रबन्ध के कारण वह 'फ्रेडरिक दि ग्रेट अर्थात् महान्' कहलाता था। समस्त जर्मनी में हाहाकार मचा हुआ था। कहीं दुर्भिक्ष था और महामारी से कहीं लोगों का संहार हो रहा था। ऐसा होते हुए भी प्रशिया में शान्ति विराजमान थी और प्रजा आनन्द कर रही थी। उस महान् फ्रेडरिक तथा उसके चतुर मंत्री के कौशल के प्रताप से यहां 'राम-राज्य' बीत रहा था।

फ्रेडरिक ने आलुओं के बोनेका प्रचार पूरे तौर से किया। वह स्वयं खेतिहरों को बीज बांटता था। उसने सड़कें बनवाईं और नहरें खुदवा रक्खी थीं। इसके राज्य में शिक्षा का खूब प्रचार हो रहा था, पाठशालायें तैयार हो रही थीं और नये नये शहर बसाये जा

रहे थे। प्रजा इसका बड़ा आदर करती थी। सब राजा लोगों के साथ इसने मित्रता पैदा करली थी। बहुत बढ़िया प्रबन्ध करके इसने प्रशिया को फ़्रांस, इंग्लैण्ड आदि के प्रायः समान कर दिया था। सेना-संगठन यहां का बड़ा अच्छा था। १७८६ में इस फ़्रेडरिक दि ग्रेट की मृत्यु हुई और इसका पुत्र राजा हुआ।

फ़्रेडरिक के मरने पर समस्त जर्मनी क्या प्रायः समग्र राजमण्डल ने शोक मनाया। जर्मनी की शेष रियासतें प्रशिया को अपना आदर्श मान कर उन्नति की चेष्टा करने लगीं।

१९—महाराज जोज़ेफ़ और तत्कालीन साहित्य।

(१७६५—१७९०)

अब मेरिया थेरेसा का पुत्र जोज़ेफ़ राजसिंहासन पर बैठा। वह स्वभाव से सरल, निरभिमान और सर्वप्रिय था। इसने जर्मनी और आस्ट्रिया की १३ रियासतों पर एक ही राजनियम द्वारा शासन किया। शिक्षाप्रणाली में इसने बड़ी उन्नति की। महन्त-समुदाय के लिए यह आज्ञा दी गई कि वे आलस्य में समय न बिता कर बालकों को पढ़ाया करें, व्याख्यान देवें और रोगियों की सेवा किया करें। पुस्तकालय और औषधालय खोले गये। बेल्जियम इसी काल से स्वाधीन हो गया। जोज़ेफ़ की मृत्यु के बाद उसका भाई 'टस्कनी का लेओपल्ड' राजा हुआ। इसने भी योग्यता के साथ राज्य में शान्ति स्थापित की।

साहित्य अब वास्तव में बड़ी उन्नति पर था। १७ वीं शताब्दी में बड़े बड़े गद्यलेखक हो गये हैं। 'एब्राहम सैंक्टा क्लैरा' आदि नामी लेखकों में से हैं। लेब्निज़ (१६४६—१७१६) नवीन दर्शन-शास्त्र का जन्मदाता आज तक विख्यात है। उल्फ़ (१६७९—१७५४) दार्शनिक विचारों का स्पष्टकर्त्ता था। वर्नक, गंटर और आक्स भी नामी ग्रन्थकार हो गये हैं।

१८ वीं शताब्दी में और भी विशेष साहित्योन्नति हुई। 'कालपस्टाक' (१७२४—१८०३) उत्तम इतिहासलेखक था। लेसिंग (१७२९—१७८१) ने अनुकरण करना छोड़ कर नवीन विचारों के अनेक ग्रन्थ प्रस्तुत किये। उसकी मृत्यु के पूर्व ही दो और उत्कृष्ट लेखक सर्वोत्तम ग्रन्थों की रचना करके अपने को अमर बना गये हैं। एक का नाम गेटी (१७४९—१८३२) और दूसरे का शिलर (१७५९—१८०५) था। गेटी की उपमा शेक्सपियर से दी जाती है। यह पैदाइशी कवि था। उपन्यास, नाटक, आख्यायिका, विज्ञान आदि सब विषयों पर इसने ग्रन्थ लिखे हैं। शिलर उत्तम कक्षा का नाटककार और कवि था। 'हम्बोल्ट' और 'रिटेर' भूगोल-विद्या पर लिख रहे थे। हर्डर और श्लेगेल उत्तम इतिहास-लेखक थे। श्लेगेल ने 'ओसानाब्रक इतिहास' नामक अत्युत्तम पुस्तक लिखी है। हेगेल और कैण्ट आदि अपने नवीन विचारों की सहायता से जर्मनी के दर्शन-शास्त्र को उच्च-कक्षा का बना रहे थे। 'शापेनहावर' ने गेटी के समय में लिखा था और इसके दार्शनिक विचार हेगेल के समान थे। वेदान्त

शास्त्र को भी विद्वन्मण्डली बड़ी गवेषणा के साथ लिख रही थी। बीथोवेन, मोज़ार्ट आदि संगीतशास्त्र के उन्नायकों में विख्यात हैं।

२०—फ़ांस में प्रजाकृत घोर विप्लव और नेपोलियन बोनापार्ट।

(१७८९—१८१५)

फ़ांस देशवासियों के विचार अब दिन प्रति दिन स्वतंत्र हो रहे थे। प्रजा पर बहुत अधिक लगान निश्चित कर दिया गया था। यहाँ के रईस (Nobles) लोग सर्व साधारण के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार कर रहे थे। इस प्रकार सब तरह व्याकुल और पीड़ित हो कर प्रजादल ने स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने का बीड़ा उठाया। अपनी जान को तिनका के बराबर समझ ये लोग "स्वातंत्र्य", "समानता" और "भ्रातृत्व" (Liberty, Equality, Fraternity) चिल्लाते हुए स्वाधीन होने के लिए यत्नवान् हुए। वे स्वाधीनता के लिए बिलकुल पागल हो रहे थे। सरकार का बहुत अन्याय देख कर, वे लोग क्रोध से जल रहे थे। वह ज्वाला यहाँ तक अधिक हुई कि १७९८ में फ़ांस के प्रजावर्ग ने घोर विप्लव उपस्थित कर दिया!

आस्ट्रिया के राजा का बहनोई लूई सोलहवाँ इस समय फ़ांस का महाराज था। लुई ने प्रजा को शान्त करने के लिए अनेकानेक उपाय किये पर कुछ भी न हो सका। प्रजा उधर विप्लव कर रही

थी और इधर रईस लोग भी मनमाना काम करने में तत्पर थे। विप्लव यहाँ तक अधिकता को पहुँचा, कि १७९३ में बलवाइयों ने एक ओर से मार काट करना आरम्भ किया, और फ़्रांस के राजा लुई और उसकी रानी को पहले कुछ काल तक क़ैद में रखकर अन्त में फाँसी दे दी!

यह साहसपूर्ण घोर हत्याकाण्ड देखकर योरोप के समस्त राजा दंग रह गये। अब समग्रयोरोपदेशीय राजमण्डल बलवाइयों पर बहुत नाराज़ होकर इस प्रचण्ड विप्लव को दूर करने के लिए कटिबद्ध हुआ।

फ़्रांसिस द्वितीय इस समय जर्मनी का महाराज था। यहाँ भी लड़ाई की तैय्यारियाँ हुईं। परन्तु आपस में मेल न होने के कारण जर्मनी बहुत निर्बल अवस्था में थी। अनेक जर्मन रईस और राजा विप्लवकारियों से मिले हुए थे। प्रशिया के राजा स्वयं उदासीन-भाव धारण किये हुए शान्त बैठे थे। फ़्रांस वाले लोगों की शक्ति रोज़ रोज़ अधिक हो रही थी। इन लोगों ने अँगरेज़ों को टूलून में हराया। अब प्रजावर्ग ने अपना एक उत्तम संगठन भी तैयार किया, और नेपोलियन बोनापार्ट इन सब का नेता हुआ। जर्मन महाराज की सेना इस समय बड़ी धीरता के साथ बलवाइयों को हरा रही थी। १७९७ में नेपोलियन ने आस्ट्रिया की सेना को हराया। आर्क ड्यूक चार्ल्स जर्मन सेना लिये हुए बड़े पराक्रम से बोनापार्ट के साथ लड़ रहा था। अन्त में जर्मन महाराज ने कैम्पो-फ़ोर्मियों की सन्धि के अनुकूल, १७९७ में, अपने दो सूबे देकर

नेपोलियन से वेनिस प्राप्त किया। बलवा वाले अब बड़ी उत्तेजित अवस्था में थे। अड़ोस पड़ोस के राज्यों पर वे धावा मारते और देशों को लूटते थे। अँगरेज़ों के साथ छेड़छाड़ करने के लिए इन लोगों ने मिसर देश पर आक्रमण किया, परन्तु वीर नेल्सन से हार कर लौट आना पड़ा। ये आस्ट्रिया पर भी बड़े सामान के साथ चढ़े, और वहाँ की सेना हरा दी। १८०१ में आस्ट्रिया को बलवाइयों के साथ लूनेवाइल में सन्धिपत्र लिखना पड़ा। इसके द्वारा आस्ट्रिया के अनेक सूबे जाते रहे और उसे बड़ी हानि हुई।

नेपोलियन प्रथम कक्षा का राजनीतिज्ञ और अत्यन्त चतुर तथा बड़ा पराक्रमी योद्धा था। केवल अपने नीतिबल के प्रताप से इसने अपने को शनैः शनैः फ़्रांस का महाराज बना लिया। इसके अलौकिक पराक्रम का हाल सुनकर सब दाँतों तले अँगुली दाबते थे, और योरोप की समस्त शक्तियाँ इसका नाम सुनकर काँपती थीं। कौशलपूर्वक नेपोलियन ने जर्मनी तथा अन्य स्थानों के कई राजा लोगों को अपने में मिला लिया था। प्रशिया के साथ भी इसने अब तक मैत्री कर रक्खी थी।

जर्मन महाराज द्वितीय फ़्रैंसिस की दशा बड़ी शोचनीय थी। वे जर्मन राजकुमार, जिनसे फ़्रैंसिस सहायता की प्रत्याशा रखता था, अब स्वदेश लाभ को छोड़ कर फ़्रांस वालों से मिल गये थे। कोई भी इसकी सहायता करने को तैयार न था। असहाय महाराज को लाचार होकर सन् १८०६ में अपना पद त्याग करना पड़ा। आज ही से हैप्सबर्ग वंश का शासन समाप्त हो गया। दो

वर्ष पूर्व फ़्रैंसिस ने 'आस्ट्रिया के महाराज' की पदवी धारण कर ली थी। वह अब भी हैप्सबर्ग के राजवंश को प्राप्त है।

नेपोलियन अब तक प्रशिया के राजा के साथ मैत्री माने हुए बैठा था, परन्तु दाँव देखकर उसने प्रशिया को भी अपने अधिकार में कर लेने का प्रबन्ध शुरू किया। अब प्रशिया-राज को चेत आया, परन्तु स्वदेश की हानि करते हुए शत्रु के साथ मित्रता क़ायम रखने का प्रत्यक्ष फल मिलने ही वाला था। बोनापार्ट ने इन लोगों पर हमला किया और इन्हें पराजित किया। प्रशिया का बहुत सा हिस्सा नेपोलियन ने अपने शासन में कर लिया। इसने १८०९ में फिर आस्ट्रिया को हरा कर उसके अनेक सूबे छीन लिए।

—:०:—

२१—नेपोलियन का पतन।

जर्मनी की घोर दुर्दशा देख कर टिराल ताल्लुक़े के देश-भक्तों ने जर्मनी के पक्ष में संग्राम करने का सङ्कल्प किया। लाखों खेतिहर हथियार ले लेकर लड़ने को तैयार होगये। इन लोगों ने बलवाइयों को अनेक बार हराया। आर्कड्यक चार्ल्स बोहेमिया में विद्रोह-कारियों के साथ घोर संग्राम कर रहा था। उधर नेपोलियन विजय-पताका फहराते हुए वाइना तक पहुँच गया। समस्त आस्ट्रिया में इस समय बड़ी अशान्ति फैली हुई थी और यह राज्य बड़ी निर्बल अवस्था को प्राप्त था। इस कारण टिराल के देशभक्तों के बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिली और उन्हें हारना पड़ा।

इस समय नेपोलियन का भाग्यसूर्य खूब चमक रहा था। आस्ट्रिया और प्रशिया अब इसी के शासन में थे। परन्तु अब वह सूर्य पराकाष्ठा को पहुँच कर शीघ्र ही अस्ताचल की ओर खिसकने वाला था। रूस महाराज अलेक्ज़ेण्डर से झगड़ा हो पड़ने के कारण, बोनापार्ट ने मास्को (रूस की पुरानी राजधानी) पर हमला करने के लिए प्रस्थान किया। सफलता दूर ही रही, दुर्दैव ने नेपोलियन को इस काल से ऐसा विकट धक्का दिया कि वह फिर न सँभल सका। उसका गौरव आज से कम होने लगा। उधर रूस के आक्रमण में बोनापार्ट की सेना का अधिकांश रास्ते में नष्ट हो गया था, और इधर जर्मनी की सब रियासतें, विशेषतया प्रशिया, अनेक अपमान सहकर अब स्वदेश का उद्धार करने को कटिबद्ध हुईं। बालक, युवक और बुड्ढे समस्त प्रजावर्ग अपने प्यारे देश के प्रेम से प्रोत्साहित होकर समरभूमि में आ खड़े हुए और अपनी जन्मभूमि का उद्धार करने के लिए प्राण भी देने को तैयार थे। इंगलेंड और रूस ने भी जर्मनी को सहायता दी। शनैः शनैः बड़ी भारी सेना एकत्र हो गई। वीर ब्लूचर और राजकुमार श्वार्ज़ेनबर्ग इस सेना के नेता थे। बड़ी चतुराई के साथ इन लोगों ने फ़्रांस वालों से युद्ध करना आरम्भ किया। 'वालबक' नामक स्थान में ब्लूचर ने अपने शत्रुओं को बड़ी करारी हार दी।

पराजित होने के कारण अब नेपोलियन की सेना घबरा रही थी। अनेक राजा लोग, जो पहले बोनापार्ट के मित्र थे, शनैः शनैः साथ छोड़ रहे थे। इसके अनुयायी दल में परस्पर विरोध होना शुरू

हो गया। सैनिकों में न तो वह प्रोत्साहन देख पड़ता था और न वह पराक्रम ही था जिसके प्रताप से समस्त संसार नेपोलियन के नाम पर थर्रा रहा था। बवेरिया ने बोनापार्ट को जवाब दे दिया और वह भी अपनी जन्मभूमि के लिए समर करने को प्रस्तुत हुई।

१६ अक्टूबर १८१३ से प्रारम्भ होकर बराबर तीन दिन जर्मन-महासेना फ़्रांस वालों से लिपज़िक स्थान पर लड़ती रही। यह घोर संग्राम आज तक अपने प्रचण्ड रूप के लिए विख्यात है। अन्त में नेपोलियन को बड़ी करारी पराजय मिली। उसके ७८,००० सैनिक इसमें मरे और ३०० तोपों से उसे हाथ धोना पड़ा। यह विजय रूस, इंगलैंड तथा जर्मनी की विशाल संयुक्त सेना का गौरव सर्वदा बढ़ाती रहेगी। फ़्रांस-वासियों के शासन से आज जर्मन देश मुक्त हो गया। उसकी जीत का डंका बज रहा था। समस्त प्रजा ख़ुशी मना रही थी और सब स्थानों में हर्ष की धूम थी।

योरोप के राजा लोग अब भी यह चाहते थे कि यदि नेपोलियन सन्धि करने पर राज़ी हो तो फ़्रांस का थोड़ा बहुत हिस्सा उसे देकर झगड़ा शान्त किया जाय, परन्तु बोनापार्ट के स्पष्ट इन्कार करने पर फिर युद्ध आरम्भ हुआ। जर्मन और अँगरेज़ी सेना-मण्डल के अधिपति ब्लूचर और वेलिंगटन अपनी विजयपताका फहराते, मारते काटते, पेरिस जा पहुँचे और नेपोलियन को गद्दी से उतार उसे 'एल्बा' द्वीप में क़ैद करके भेज दिया और गत लुई १६ के भाई का राज्याभिषेक किया गया। शीघ्र ही १८१५ में एल्बा से भागकर नेपोलियन ने फिर फ़्रांस पर छापा मारा और अपने को

राजा बना लिया। इधर ब्लूचर और वैलिंगटन अपनी महासेना लिये हुए तैयार थे। संग्राम शुरू हुआ। इन लोगों ने जगद्विख्यात 'वाटर्लू' के प्रचण्ड युद्ध में बोनापार्ट को हरा कर सदा के लिए झगड़ा शान्त किया। १६ जून १८१५ को वाटर्लू युद्ध के उपरान्त वह सेण्ट हेलेना टापू में क़ैद कर दिया गया और अब सब राज-समुदाय निर्भय होकर निश्चिन्त हो बैठा।

लुई १८ को फ़्रांस का राज्य मिला। इसी समय पेरिस की द्वितीय सन्धि सब राजा लोगों के बीच लिखी गई। राइन नदी के पश्चिम ओर का भाग जर्मनी को लौटा मिला। फ़्रांस को करोड़ों रुपया जर्मनदेश के लिए हर्जाना (Indemnity) देना पड़ा। कुछ काल बाद वायना की महासभा में राजसमूह एकत्र हुआ। इसने लम्बार्डी, वेनिस, टिराल आदि के सूबे आस्ट्रिया को वापस दे दिये।

२२—स्वतंत्रता के लिए जर्मन देश की चेष्टा।

इस समय यहां शासक-राज-समुदाय अत्यन्त प्रबल था। संशोधन के बाद वाली ३० वर्ष की लड़ाई में छोटे रईसों के नष्ट हो जाने पर बड़े राजा लोगों ने अपने अपने अधिकारों को बढ़ा लिया था और अब वे अपनी प्रजा की ओर पूरा ध्यान नहीं देते थे। प्रजावर्ग का राज्यस्वत्व कम हो चला था और पूर्णाधिकार शासक-मण्डली के हाथ में था। १८१५ के उपरान्त रूस के महाराज अलेक्ज़ेण्डर, आस्ट्रिया के फ़्रांसिस और प्रशिया के फ़्रेडरिक ने आपस में एक पवित्र अभिसन्धि (The Holy Alliance) की। इसके द्वारा

उन्होंने न्याय के साथ नियमपूर्वक प्रजापालन करने की प्रतिज्ञा की। धीरे धीरे ये लोग सर्व-साधारण के साथ यथेष्ट व्यवहार करने लगे और प्रजा राज्यकार्यों से अलग रक्खी जाती थी। इधर प्रजा वर्ग को स्वत्व खो बैठने का भय हुआ। ये लोग डरते थे कि कहीं राज्य में योग देने की प्रथा उनके हाथ से जाती न रहे। प्रजास्वत्व जर्मनदेश में परम्परागत था और सोलहवीं शताब्दी तक वे पूर्णतया सम्मति दे सकते थे। तदनन्तर २०० वर्ष में समय ने पलटा खाकर राजाओं की शक्ति बढ़ा के सर्व साधारण को निर्बल कर दिया। फ़्रांस-विप्लव ने इन लोगों के नेत्र खोल दिये। वे अपनी हानि को देखने लगे और अब फिर उस हक़ को प्राप्त करने के लिए सचेष्ट हुए। उनकी इच्छा यह कदापि न थी कि राजा लोगों को बाहर निकाल कर जर्मनी में प्रजासत्तात्मक शासन स्थापित करें। बरन उसी राज-समुदाय की उन्नति चाहते हुए एक 'नियमित शासन' (Constitutional Government) को उत्पन्न करने वाले थे जिसमें उन्हें स्वयं योग देने का अधिकार मिले और वह अपने देश की उन्नति कर सकें।

इस सिद्धान्त को हाथ में लेकर, अनेक अग्रगण्य प्रजावर्गीय विद्वानों ने आन्दोलन करना शुरू किया। वे अपने उत्तम उत्तम व्याख्यानों से सर्वसाधारण को प्रोत्साहित करते थे। वे लोग विप्लव उपस्थित करना एक दम नापसन्द करते और राजगण से अपने 'हक़' पाने के लिए प्रार्थना करते थे। पहले राजा लोगों ने उनकी बात मानने की प्रतिज्ञा की। परन्तु कालान्तर में वे आनाकानी करने लगे।

निदान प्रजावर्ग ने ग्रौर भी प्रबल रूप धारण किया ग्रौर शनैः शनैः राजा लोगों ने इनकी योग्यता देख कर इन्हें स्वत्व देना शुरू किया।

वे एक ऐसी महती विचार-सभा का संस्थापन चाहते थे, जिस में उनके प्रतिनिधि पूरे तौर से सम्मति दे सकें। उनकी इच्छा थी कि शासन-सम्बन्धी काम गुप्त रीति से न किया जावे। वे शासन को एक प्रकार का संगठन देने की अभिलाष करते थे। उन लोगों ने अनेकानेक प्रयत्न किये। किन्तु अभी प्रजावर्ग को थोड़े दिन तक ग्रौर भी प्रतीक्षा करनी पड़ा।

पूर्ण ऐक्य न होने के कारण इन्हें सफलता न मिल सकी। अनेक रियासतों ने प्रजा की बात मान कर कार्य्य करना प्रारम्भ किया। आस्ट्रिया ग्रौर प्रशिया इस बात के लिए अब भी नहीं राज़ी थी।

इस आन्दोलन का फल रूप ज़ाल-वेरेन (Zollverein) अथवा चुंगी-समितियों का एका होना सदा विख्यात रहेगा। अभी तक यह रीति थी कि यदि जर्मनी के एक ताल्लुक़े या रियासत से कोई माल दूसरी जगह जाता तो उन स्थानों में न्यारी न्यारी चुंगी देनी पड़ती थी। इस कारण व्यापार को बड़ा आघात पहुँचता था ग्रौर उसकी उन्नति में अनेक विघ्न होते थे। अतएव जर्मनी की अनेक रियासतों ने इस विषय में ऐक्य स्थापन कर लिया, पर आस्ट्रिया इस बात पर न तैयार हुई।

१८३७ में इंग्लैण्ड के विलियम चतुर्थ की मृत्यु हुई। अभी तक अँगरेज़ों के राजा, जार्ज प्रथम से उपरान्त, हनोवर के निर्वाचक (Electors of Hanover) कहलाते थे, परन्तु १८३७ में वह पद

विलियम चतुर्थ के भाई अर्नेस्ट आगस्टस को मिल गया और इन लोगों के हाथ से जाता रहा।

२३–सन् १८४८ का फ़्रांस देशीय विप्लव।

१८४८ के कुछ पूर्व लुई फ़िलिप फ़्रांस के सिंहासन पर बैठ चुका था। इसने यह स्वीकार कर लिया था कि मैं गद्दी बैठने पर प्रजा-तन्त्र शासन करूँगा। लोग इस बात की प्रत्याशा करते रहे; परन्तु फ़िलिप अपने वंश वालों की भलाई में तत्पर था। इसने प्रजा को शासन-स्वत्व देने के लिए कुछ भी चिन्ता न की। फ़्रांस देश की प्रजा ने यह देख कर कि उनकी आशा दुराशा मात्र है, घोर आन्दोलन मचाना आरम्भ करके शनैः शनैः फिर एक विकट विप्लव उपस्थित कर दिया। फ़िलिप को इंग्लैण्ड भागना पड़ा और यहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य (Republic) स्थापित हुआ, जिसका पहला सभापति महाराज नेपोलियन निर्वाचित हुआ।

इस १८४८ के विप्लव का प्रभाव समस्त योरोप पर पड़ा। विशेषतया जर्मन देश के स्वतन्त्र विचारों को इससे बड़ी सहायता मिली। जर्मनी की समस्त प्रजा ने आन्दोलन शुरू किया और यह चार बातें अपने अपने राजाओं से स्वत्व-प्रतिपादन-पूर्वक मांगने लगे। (१) छापेखाने तथा व्याख्यान की स्वतंत्रता अर्थात् जिस मनुष्य की जो कुछ आलोचना करने को इच्छा हो, वह उसे व्याख्यान देकर अथवा छापकर प्रकट कर सके। (२) सब लोगों को हथियार बाँधने की आज्ञा दी जावे और सब जहाँ चाहें वहाँ

राजनैतिक या और मामलों के लिए सभा कर सकें। (३) प्रकट रूप से अपराधियों के मुक़द्दमे किये जावें और पञ्चों (jury) की नियुक्ति हो। (४) प्रजा भी रियासत के प्रबन्ध के लिए महासभा (Parliament) में अपने प्रतिनिधि भेज सके।

अनेक रियासतों ने भयभीत होकर सब बातें मान लीं, परन्तु आस्ट्रिया और प्रशिया अब भी ऐसा करने के लिए तैयार न थीं। यह देखकर लोगों का क्रोध और भी बढ़ा और वे हथियार बाँध बाँध के संग्राम करने को सन्नद्ध हुए। वायना और बरलिन में बलवा शुरू हो गया। इस आन्दोलन को फ़ौज ने शान्त किया। तब भी महाराज फ़र्डीनेण्ड को राजधानी (वायना) छोड़ भाग जाना पड़ा। संशोधनों के लिए प्रतिज्ञा कराके, लोगों ने फ़र्डीनेण्ड के भतीजे फ़्रंसिस जोज़ेफ़ को महाराज बनाया। यहाँ बरलिन में भी ख़ूब लड़ाई हुई और अन्त में संगठन (Constitution) तैयार करने का वचन देने पर युद्ध शान्त हुआ।

जर्मन-वासियों की यह इच्छा थी कि एक जातीय विचार-सभा (National Parliament) ज़रूर खोल दी जावे और जन्मभूमि के सब प्राचीन शासन-संगठनों में सुधार किया जावे। फ़्रैंकफ़र्ट नामक स्थान पर ६०० प्रजा-प्रतिनिधि शासन-विषयक प्राथमिक कार्रवाई निश्चित करने के लिए एकत्र हुए। इन लोगों ने जातीय सभा का निर्वाचन करके आस्ट्रिया के आर्कड्यूक जान को अपना सभापति और संरक्षक बनाया। बाद को यह तै किया गया कि देश के लिए नये सिरे से एक क़ानून तैयार हो और जर्मन महा-

राज्य में एक सांहतिक समिति रहे, जिसमें केवल एक दल (House) माना जावेगा। प्रशिया के राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ को इन लोगों ने अपना महाराज निर्वाचित किया। यह जान कर कि लोगों ने विचार-सभा में केवल एक सर्वसाधारण का दल (House of Commons) ठीक किया है, उसने महाराज-पद अस्वीकार करते हुए यह रूखा उत्तर दिया कि मुझे भय है कि यहाँ के लोग यह भूल गये हैं कि जर्मनी में भी रईस और राजकुमार (Nobles and princes) वर्तमान हैं, और मैं उनमे से एक हूँ। इस बात पर जर्मनी भर में बड़ा कोलाहल मचा। विशेषतया दक्षिण के किसान लोग लड़ने को तैयार हो गये। विद्यार्थीदल छापेखाने की स्वतंत्रता के लिए चिल्ला रहा था। फ़ौज ने फिर इन सब को ठिकाने किया। १८५१ में जर्मनी के राजा लोगों ने अपनी सांहतिक सभा (Federal Body) को नियुक्त कर दिया और इस कारण कुछ काल के लिए संतोषजनक सुधार-विषयक जर्मन-प्रजा की प्रत्याशा जाती रही। यद्यपि इन सब आन्दोलनों का पूरा फल प्रजा के हस्तगत न हो सका तो भी पहले की अपेक्षा बहुत विशेष स्वातंत्र्य उन लोगों को मिल गया था। इस समय सरकार ही की जीत रही और प्रजा का मनोरथ न सिद्ध हो सका। कारण कि यथोचित एकता उनमें अभी तक नहीं आई थी।

२४—विलियम प्रथम और राजकुमार बिस्मार्क.

(१८६०—१८८८)

बहुत काल पहले से अपने उत्तम प्रबन्ध और उचित प्रजा-पालन के कारण प्रशिया दिन प्रति दिन उन्नति कर रही थी। आजकल प्रशिया जर्मनी की समस्त रियासतों में श्रेष्ठ और शक्तिसम्पन्न थी। देश के राजनैतिक मामलों और शासन-सम्बन्धी विचारों में यही अग्रसर थी। इसके प्रचलित किये हुए क़ानून अन्य जर्मन-राजा प्रसन्नतापूर्वक मानते और मन से इसका अनुकरण करते थे। अब फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ को मृत्यु होने पर १८६१ में उसका पुत्र विलियम प्रथम प्रशिया की गद्दी पर बैठा। राज्य पर बैठते ही, उसने अनुभवशील और नीतिकुशल राजकुमार बिस्मार्क को १८६२ में अपना महामंत्री बनाया। यह सुचतुर राजनैतिक वीर आज तक आदर्श मनुष्य माना जा रहा है। इसके पूर्व यह फ़्रांस और रूस में राजदूत रह चुका था और इस समय इसकी राजनैतिक योग्यता प्रौढ़ता को पहुँची हुई थी। अब अत्यन्त कार्य्य कुशल राजा और महामंत्री को प्राप्त करके, प्रशिया ने स्थिरता के साथ उन्नति के शिखर पर चढ़ना प्रारम्भ किया। आजकल प्रशिया की प्रत्येक कार्य्यवाही, प्रत्येक क़ानून का प्रचार, उसके चतुर कार्य्यकर्ताओं का योग्यता का परिचय देता था। यह बिस्मार्क ही के प्रशंसनीय परिश्रम और उसके अप्रमेय चातुर्य्य का फल था कि थोड़े काल बाद प्रशिया के राजा को समस्त जर्मनी ने अपना महाराज बनाया।

प्रतिनिधिसभा (Representative chamber) में इस समय सामरिक संशोधन (Military reform) के लिए बड़ा विवाद हो रहा था। प्रतिनिधि-समूह संशोधन अस्वीकार करता था। अन्त में बिस्मार्क ने यह मामला हाथ में लेकर वह क़ानून सर्वस्वीकृत करा दिया। यहाँ रेल, डाक, तथा तार-विभागों की अच्छी उन्नति हो रही थी।

शेल्सविग और हालस्टन नामक दो ताल्लुक़े बहुत समय से डेनमार्क के राजा के हाथ में चले आ रहे थे। वहाँ के रहने वाले जर्मन और डेन लोगों से सदा झगड़ा होता रहता था। १८६३ में डेनमार्क-राज के बिना सन्तान मरने पर क्रिश्चियन दशम वहां का राजा हुआ। प्रशिया के राजा यह न चाहते थे कि उपर्युक्त दो ताल्लुक़े अब भी डेनमार्क में शामिल रहें। इस कारण १८६४ में डेन लोगों के साथ लड़ाई शुरू हुई। आस्ट्रिया ने प्रशिया को सहायता दी। बराबर एक साल तक लड़ने के बाद डेन लोगों ने हार मानी और हालस्टन तथा शेल्सविग उनके पास से जाते रहे।

यह जान कर कि प्रशिया वे दोनों ताल्लुक़े अपनी ही रियासत में मिला लेना चाहती है, आस्ट्रिया लड़ने को तैयार हुई। प्रशिया को इटली और आस्ट्रिया को बवेरिया, वर्टेम्बर्ग और बेडेन सहायता देने के लिए कटिबद्ध हुए। प्रशिया वालों ने अपनी सेना के तीन विभाग करके आस्ट्रिया की सेना को घेरना शुरू किया। अनेक स्थानों पर लड़ते हुए अन्त में क्वैनिग्ग्रट्ज़ या साडोवा स्थान पर दोनों दल एकत्र हुए। यहां पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। सेनापति के अयोग्य और

तोपों की कमी होने के कारण आस्ट्रिया वालों को यहां हारना पड़ा। प्रशिया के लोगों ने इधर वायना तक धावा मारा और १८६६ में आस्ट्रिया के महाराज फ़्रांसिस जोज़ेफ को सन्धिपत्र लिख देना पड़ा।

सन्धि करने के समय बिस्मार्क सिवाय अपने लाभ के और किसी बात की परवा नहीं करते थे। उन्हें अपयश का भय नाम मात्र नहीं होता था। उन्हें अपने फ़ायदे से काम था। कुछ कारणों से हैनोवर और हेसे-कासेल से भी युद्ध ठन गया। इनको भी प्रशिया ने हरा दिया। १८६६ में प्रेग के सन्धिपत्र से प्रशिया को अतिशय गौरव प्राप्त हुआ। अब जर्मनी की संहति तोड़ दी गई। हैनोवर, हेसेकासेल, नासो, शेल्सविग और हाल्सटन ये सब ताल्लुके प्रशिया की रियासत में मिला दिये गये। विरोध करने के कारण वर्टेम्बर्ग और बेडेन को बहुत सी भूमि तथा हर्जाना और ऐसे ही आस्ट्रिया को बहुत रुपया प्रशिया के लिए देना पड़ा।

आस्ट्रिया को पृथक् राज्य बना के जर्मनी के दो भाग किये गये। एक संहति (Federation) उत्तर जर्मनी में तैयार हुई और ऐसे ही दक्षिण में भी एक संहति बनी। प्रशिया राज्य के बहुत शक्ति-सम्पन्न होने से उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई नहीं बोल सकता था और उत्तर तथा दक्षिण की भावी एकता के लिए सब मसाला तैयार था।

२५—फ्रांस देश से भयानक संग्राम।

(१८७०—१८७१)

स्पेन का सिंहासन ख़ाली होने के कारण, जर्मन-राज-कुमार, ('होहेनज़ालर्न' सूबे के) लेओपल्ड के वहां गद्दी पर बैठने को गरम चर्चा उठी। यह देखकर कि जर्मन-राज-कुमार स्पेन का राजा होगा, फ़्रांस ने भय भीत होकर जर्मनी के साथ घोर संग्राम की चेष्टा की।

प्रशिया-राज विलियम ने उत्तरीय सांहतिक समिति (North Federal Council) की सम्मति से लड़ाई का सामान इकट्ठा करना आरम्भ किया। तुरन्त ही उत्तर और दक्षिण की समस्त रियासतों के प्रतिनिधि राजकीय महासभा (Royal Diet) में एकत्र हुए, और सब लोगों ने प्रशिया की पूरी सहायता करने का निश्चय किया। फ़्रांस के राजा नेपोलियन को यह देखकर बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसे यह पूरा विश्वास था कि दक्षिण-जर्मनी के लोग लड़ने को कदापि न तैयार होंगे और उदासीनभाव रक्खेंगे। अब जर्मन-सेना फ़्रांस वालों के दल से कहीं बढ़कर थी।

फ़्रांस के लोग सदा आक्रमण करने में अग्रसर रहा करते थे। इस समय न तो उनके यहां सेना और न लड़ाई का सामान ही तैयार था। उन लोगों ने बिना तैयारी किये लड़ाई का डंका पीट दिया था। सीमा प्रान्त तक फ़्रांस-सेना आचुकी थी, किन्तु गोला, बारूद बहुत कम साथ में था। व्यवस्था यह थी कि मेज़ में १,५०,००० सैनिक नियत किये जावेंगे। स्ट्रासबर्ग में १,००,०००

और शैलान्स में ५०,००० । अब मैज़ और स्ट्रासवर्ग की सेना को आगे बढ़ते हुए फ़्रैंक्क फ़र्ट में मिलकर उत्तरीय जर्मन-सेना से युद्ध करने की सम्मति हुई, और विजय प्राप्त होने पर यह आशा की थी कि दक्षिण-जर्मनी और आस्ट्रिया ज़रूर सहायता देंगे। इन मनमोदकों से फ़्रांस वालों ने अपना चित्त ख़ूब प्रसन्न कर लिया था, परन्तु वास्तविक प्रबध कुछ भी न था। सैनिक लोग शिथिल बैठे हुए रेल गाड़ी का रास्ता देखा किये। इसी प्रकार एक पखवारा व्यतीत हुआ।

यहां जर्मनी में बड़ी चतुरता और तीव्रता के साथ सब सेना सीमा पर एकत्र होकैर फ़्रांस वालों से लड़ने के लिए पूर्णतया तैयार थी। जर्मन-सेना की तीन शाखायें थीं। सेनापति स्टीन मेज़ के आधिपत्य वाली शाखा दाहिनी ओर नियुक्त थी, राजकुमार फ़्रेडरिक चार्ल्स के सेनापतित्व में सैनिक लोग रेन (Rhen) स्थान पर थे और प्रशिया के युवराज के नेतृत्व में एक दल 'राइन' के दाहिने किनारे पर स्थित था। ये सब सैनिक मिलकर ४,४७,००० संख्या में थे। यह सेना सीमा पर पड़ी हुई थी। यहां जर्मनी में १,८८,००० सेना आवश्यकता के लिए रोक रक्खी गई थी और उसके बाद फिर २,२६,००० सिपाही काम पड़ने पर आ मिलने के लिए तैयार थे।

अगस्त १८७० से संग्राम होना आरम्भ हुआ। जर्मनी की सेना आगे बढ़ी इन लोगों का अभिप्राय यह था कि अलग अलग लड़ते हुए अन्त में सब एक स्थान पर एकत्र हो आवें। प्रशिया के युवराज

अपनी सेना आगे बढ़ाते गये और 'वर्थ' में अपने विपक्षियों को हराया। दो शेष शाखाओं ने मिल के 'स्पिकेरेन' स्थान पर फ़्रांस वालों को पराजित किया। इन लोगों ने तार और रेल की पटरियों को हटा दिया, जिससे अधिक फ़्रेंच सेना अब नहीं आ सकती थी। यहां स्टीनमेज़ के नेतृत्व वाली फ़्रांसदेशीय सेना 'मेज़' के पूर्व में थी। नेपोलियन ने हुक्म दिया कि मेज़ वाली सेना 'शैलान्स' के लोगों से आ मिले और मेज़ का क़िला बचाने के लिए कुछ सिपाही वहाँ छोड़ दिये जावें। फ़्रांस के सिपाहियों को हटते हुए देखकर जर्मन-सेना ने कोलम्बे स्थान में उन पर हमला करके विजय प्राप्त किया। जर्मन लोगों ने आगे बढ़कर 'ग्रेवेलट' स्थान पर अपना अधिकार किया।

फ़्रांस वालों की सेना पीछे हटती हुई 'मेज़' ही में एकत्र हो रही थी, इधर जर्मन लोग चारों ओर से रास्ता रोकते हुए समस्त फ़्रेंच सेना को 'मेज़' में घेर लेने वाले थे। शनैः शनैः विपक्षियों को भागते हुए 'मेज़' स्थान में ही बन्द होना पड़ा। जर्मन लोगों ने चट से एक शाखा और अपनी सेना में तैयार की। पहली और दूसरी शाखा 'मेज़' को घेरे पड़ी रही और शेष दो 'शैलान्स' को शत्रुओं से लड़ने के लिए रवाना हुईं। शैलान्स की सेना कुछ पूर्व मेज़ वालों को छुड़ाने के लिए चल चुकी थी। जर्मन-सेना को यह बात मालूम हो गई और उन लोगों ने उसे भी घेर कर 'सेडान' नामक नगर में रोक दिया। महाराज नेपोलियन यहाँ मौजूद था। उसने सुलह करने की बात उठाई। नेपोलियन क़ैद कर

लिया गया। सेडान में जो कुछ लड़ाई का सामान था, जर्मनी के हाथ आया। ५० सेनापति, ५००० अफ़सर, ८३,००० सैनिक, ५५८ तोपें और ६०० घोड़े जर्मन लोगों को मिले। कुछ काल बाद 'मेज़' की सेना ने भी अधीनता स्वीकार की। यहां पर जर्मन-देश-वासियों को हज़ारों तोपें और घोड़े मिले।

इस प्रकार बड़े कौशल के साथ फ़्रांस-वासी सम्यक्तया पराजित किये गये। २४ फ़र्वरी १८७१ में सन्धिपत्र हो गया और यह भयङ्कर संग्राम समाप्त हुआ। पल्सास का सूबा, 'मेज़' और लोरेन फ़्रांस ने जर्मनी को दे दिया। फ़्रांस को बहुत सा रुपया हर्जाने (Indemnity) में देना पड़ा। इस रुपया के अदा होने के समय तक जर्मनी ने पेरिस के पास वाले अनेक क़िले अपने अधिकार में रक्खे। १० मई १८७१ में फ़्रैंकफ़र्ट स्थान पर इस सन्धि की पुष्टि की गई।

२६—नवीन जर्मन-महाराज्य।

(१८७१)

असंख्य विपत्तियों को सहन करने के उपरान्त, अनेक कष्टों को झेलकर, और न जाने कितना ख़ून ख़राबा करके, अब जर्मनी ने 'एकता' का पाठ सीखा। उत्तर और दक्षिण जर्मनी अब 'एक' हो गये। घृणा उत्पन्न करने वाला आपस का अन्तर अब नष्ट हो गया और प्रत्येक जर्मन वासी का हृदय अपने स्वदेशी भाइयों की ओर प्रेम की उमंगे लेने लगा। जहाँ देखो वहाँ जर्मनी की उन्नति

और जन्मभूमि के लाभ के लिए पारस्परिक ऐक्य वर्तमान था। क्या समाज, क्या साहित्य और क्या सरकार किसी विषय के सारांश का मन्थन करने के लिए बहुधा जो पारस्परिक विवाद प्रतीत होता है, उससे स्वदेश के सार्वलौकिक हित को क्षति पहुँचाना आवश्यक नहीं है, प्रत्युत हानि के बदले चातुर्य्य के साथ काम करने से लाभ अवश्यमेव होगा।

जर्मनी की अनेक रियासतों ने आपस में सलाह करके प्रशिया के राजा को अपना महाराज बनाना स्थिर किया। तदनुकूल १ जनवरी १८७१ को रियासतों के प्रतिनिधिवर्ग ने विलियम प्रथम को 'महाराज' कह कर अभिवन्दन किया। इसी समय से निश्चित किया हुआ २६ रियासतों वाला जर्मन महाराज्य का संगठन अब भी प्रचलित है। उन सब पर प्रशिया की देख रेख रहती है।

महाराज्य के प्रबन्ध पर विचार करने के लिए बरलिनराजधानी में दो महासभाओं की बैठक होती है। जिस सभा में रियासतों के मामले पेश होते हैं और राज्य-प्रतिनिधि एकत्र होते हैं उसको बुण्डेस्रैथ (Bundesrath) कहते हैं। दूसरी सभा में जर्मन प्रजा अपने प्रतिनिधि भेजती है, और इसमें देशसम्बन्धी क़ानून आदि सार्वजनिक विचार पेश किये जाते हैं। बुण्डेस्रैथ के अनेक पदाधिकारी और प्रतिनिधि इसमें भी स्थान पाते हैं। इस महासभा का नाम 'राइस्टाग' (Reichstag) है। प्रशिया के महाराज राइस्टाग के स्थायी सभापति हैं। शासन-सम्बन्धी अधिकांश काम बुण्डेस्रैथ के हाथ में है, परन्तु सार्वलौकिक विचारों में उसे राइस्टग की सम्मति

लेना आवश्यक होता है। जल तथा स्थल सेना पर महाराज प्रशिया का अधिकार है। राज्य के सब काम सांहतिक समिति की अनुमति से होते हैं। बवेरिया और वर्टेम्बर्ग, अपना शासन-कार्य्य, रेल, तार, डाक, सेना आदि स्वयं देखते हैं। राइस्टाग में एक ही जन-समुदाय (House) रक्खा गया है। इन सभाओं को बैठक प्रति वर्ष हुआ करती है।

प्रशिया की एक न्यारी विचार-सभा है। १८७१ में महाराज्य की महासभा की प्रथम बैठक हुई; प्रबन्ध प्रणाली प्रायः वही स्थिर रही, क्योंकि विशेष परिवर्तन की आवश्यकता नहीं देखी गई।

विदेश-नीति (Foreign Policy)। बिस्मार्क ने विदेशी शक्तियों से मैत्रीभाव करना आरम्भ किया। इंग्लैण्ड, इटली, आस्ट्रिया और रूस के साथ मित्रता के सन्धिपत्र हुए। रूस और आस्ट्रिया के महाराज ने बरलिन में आकर अपनी मित्रता और प्रेम का परिचय दिया। जर्मन-महाराज इटली को गये और वहाँ के राजा विकृर इम्मनुयेल ने भी बरलिन में आकर महाराज की अभ्यर्थना स्वीकार की। सब के साथ मैत्री करके बिस्मार्क ने फ्रांस को अकेला छोड़ दिया, ताकि वह जर्मनी के विरुद्ध कुछ न करसके।

गृह्य-नीत (Home Policy)। रियासतों तथा प्रशिया के महन्त-समुदाय में बहुत काल से बड़ा विवाद चला आ रहा था। इसका फ़ैसला करने में आजकल बिस्मार्क तत्पर था। १८७२ में 'जेसुइट' (एक कट्टर ईसाई दल) लोग राज्य के बाहर

निकाले जाने लगे और शीघ्र ही एक क़ानून 'मे ला' (May Law) नामक प्रचलित किया गया जिसके अनुकूल प्रत्येक महंत को व्यावहारिक शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक था और बिना राजपदाधिकारियों की आज्ञा के उनकी नियुक्ति नहीं हो सकती थी।

—:०:—

२७—जर्मनी के तत्कालीन राजनैतिक दल।

सोशलिस्टपार्टी (सामाजिक-समुदाय), ये लोग फ़र्डीनेण्ड लासेल के अनुयायी थे। १८६२ से इस मत का प्रारम्भ हुआ। अपनी व्याख्यान-शक्ति के प्रताप से लासेल ने समस्त जर्मनी में आन्दोलन मचा दिया। इन लोगों का सिद्धान्त यह है कि असहाय, निर्धन लोगों को कष्ट सहने की कोई ज़रूरत नहीं। अमीर आदमियों की सब सम्पत्ति लेकर प्रजा में बराबर बराबर बाँट देने से सब की आपत्तियों का निवारण होगा। लाखों मनुष्य यह मत मानकर इसे कार्य्यपरिणत करने के लिए पागल हो रहे थे। लासेल की मृत्यु के बाद उसके अनुयायियों ने इसी विषय पर व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। धीरे धीरे यह सिद्धान्त सभ्य-समाज में फैलने लगा। ये लोग बड़े निडर हो रहे थे। दो एक बार महाराज का प्राण-संहार करने के लिए इन लोगों ने प्रयास किया, परन्तु दाँव ख़ाली गया। इस बात पर बड़ा गड़बड़ हुआ। १८७८ में बिस्मार्क ने एक क़ानून से पुलीस और फ़ौज को शक्ति बढ़ाकर इन लोगों को क़ाबू में करने का प्रयत्न किया।

लिबरलदल (उदारदल) वालों ने इसी समय से अपना प्रकट रूप धारण किया। ये लोग इस बात के प्रयत्न में थे कि राज्य का शासन-अधिकार विशेषतया प्रजा के हाथ में आय और राजों महाराजों का इस मामले में उतना गौरव न रहे। ये लोग उदार-विचारों के थे। १८७० में इसी दल के कुछ लोग यह प्रयत्न कर रहे थे कि जर्मन-महाराज्य में उत्तर तथा दक्षिण की दो सांहतिक समिति न हों, बरन एक ही संहति समस्त राज्य की हो। इनका नाम जातीय उदारदल (National Liberals) पड़ा। इस समुदाय के गर्मदल (Extremists) वालों का नाम रेडिकल्स (Radicals) है। सनातन दल (Conservatives) उदार लोगों का मत-पोषण कदापि नहीं करता। ये राजा के पक्ष के हैं। राज-सत्ता को दृढ़ करना ही इनका अभीष्ट रहता है। कुछ 'कैथालिक' धर्मवालों ने सेन्टर्स (Centres) नाम का अपना एक समूह तैयार किया। अपने धर्म की रक्षा और प्रत्येक राज्य की पृथक् स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करना इनका उद्देश्य था। यह समिति १८७० में बनी। ग्वेल्फ्स (Guelphs) लोग १८७१ के जर्मन-महाराज्य-व्यवस्थापक ऐक्ट् (Act) को अब भी नहीं मानते थे। इतने दलों के अतिरिक्त और भी अनेक छोटे बड़े समुदाय वर्त्तमान थे।

—:०:—

२८—बिस्मार्क के संशोधन।

१८७० के पहले सनातन दल बिस्मार्क की सहायता कर रहा

था। बिस्मार्क स्वयं सनातन दल का था। धीरे धीरे जातीय उदार लोगों की संख्या और शक्ति बढ़ते देखकर उसने इन लोगों के साथ काम करना आरम्भ किया।

पहले हर एक रियासत और ताल्लुक़े में पृथक् पृथक क़ानून प्रचलित थे। बहुत काल से यत्न करते करते १८७७ से सब जगहों में एक क़ानून कर दिया गया एकही प्रकार के न्यायालय और समान पदाधिकारी नियत होने लगे। राज्य भर में एकही तौल का प्रचार किया गया। एक प्रकार के सिक्के चलाये गये। यहां टकसालों का प्रबंध अनेक रियासतों का न्यारा न्यारा है और वे अपने राजा की छाप सिक्कों पर लगा सकते हैं।

१८७३ में प्रशिया का बैङ्क राजकीय बैङ्क बनाया गया। जर्मनी के नोट सिर्फ़ इसमें और छ और बैङ्कों में तैयार हो सकते हैं।

रेल-विभाग की उन्नति करने के लिए बिस्मार्क सदा यत्नवान् रहता था। यह इसी के परिश्रम का फल था कि १८७२ में २००० मील रेल-पटरा होने पर भी केवल १८७७ तक १८,८३० मील रेलवे हो गई। उस समय से लेकर ख़ूब उन्नति करते चले आने के कारण १९०० में ३०,००० मील रेलवे होगई। बिस्मार्क की यह हार्दिक इच्छा थी कि जर्मन-देश की समस्त रेलें प्रशिया की ही अथवा उसके अधीन हो जावें। १८७३ में उसने एक राजकीय रेलवे-कार्यालय खोला। इस विषय में भी उसे सफलता प्राप्त हुई। रेलवे क़ानून बनाने का अधिकार प्रशिया के हाथ में है।

धार्मिक विवाद आज कल बहुत गर्म था। कैथोलिक और प्रोटेस्टैण्ट लोगों में अपने अपने बड़प्पन के विषय में बड़ा झगड़ा होता रहा। अन्त में कैथोलिक लोगों को विश्वविद्यालय में कुछ स्वत्व मिला और अब ये लोग गिर्जाघरसमिति (Church) के सभासद नहीं रहे। इधर उदार दल महन्त-समुदाय (Papacy) को क़ाबू करने का यत्न कर रहा था। यह जान कर लाखों मनुष्य असंतुष्ट हुए। १८७६ में बिस्मार्क सनातनी लोगों से फिर मिल गया और रियासत तथा गिर्जाघरसमूह के पार्थक्य का विरोध करना आरम्भ किया, एवं स्वतंत्र व्यापार का प्रचार और महाराजत्व का गौरव स्थिर करने के लिए कटिबद्ध हुआ।

उसने सब विभाग अलग अलग कर दिये। प्रत्येक विभाग का एक एक मंत्री (Minister) नियत किया गया। प्रबन्धशैली में बहुत कुछ सुधार हुआ। १८७४ से तार और डाक के विभाग एक कर दिये गये। १८७६ से पृथ्वी के भीतर भीतर जाने वाला तार खोला गया।

१८७२ में केवल ७४०० डाकख़ाने थे। पर १८९९ में ३६,३८८ हो गये। जर्मन-देश के प्रायः समस्त विभाग अच्छी उन्नति कर रहे हैं।

सम्पत्ति-विभाग (Finance) में अनेक सुधार किये गये। उस कच्चे माल (Raw material) को छोड़ कर जिसके द्वारा जर्मन लोग बहुमूल्य चीज़ें तैयार करते हैं, जर्मनी में आने वाली चीज़ों (Imports) पर ५ फ़ी सदी चुंगी लगा दी गई। तम्बाकू

और ब्राण्ड आदि पर कर (Tax) लगाया गया। इन सुधारों का यह फल हुआ कि १८७९ की अपेक्षा १८९९ में चुंगी की आमदनी प्रायः चौगुनी बढ़ गई। चुंगी की आमदनी में से केवल ४५ लाख रुपया सरकारी ख़ज़ाने मे रक्खा जा सकता है। अधिक होने से शेष रुपया सब रियासतें आपस में बाँट लेती हैं। पर काम पड़ने पर वे आवश्यकतानुसार देने को तैयार भी रहती हैं। इस क़ानून का नाम 'फ़्रंकस्टीन क्लाज़' है। १८८० में उदार मंत्रियों के पदत्याग करने पर सनातनी लोग उन स्थानों पर नियत हुए। 'फ़्रंकस्टोन' साहब उन्हीं सनातनी मंत्रियों मे से थे। इनके ही नाम पर उक्त क़ानून बनाया गया, क्योंकि उस प्रस्ताव के पेश करने वाले आप ही थे।

आज कल सनातनी दल बड़ा ज़ोर बाँध रहा था। ये लोग बिस्मार्क के पक्ष में होने से अब शक्तिमान् हो रहे थे। उदार लोगों की उन्नति की आशा दुराशा मात्र थी, तब भी ये लोग अपने गौरव के लिए जी तोड़ परिश्रम कर रहे थे। इधर ग्वेल्फ़्स-समुदाय और गर्म दल वाले उदार लोग भी इनकी सहायता के लिए तैयार हुए। बिस्मार्क ने यह सांहतिक शक्ति देख कर कैथोलिक लोगों को अपने में मिला लिया। सरकार भी इन लोगों पर कृपा करने लगी, और शक्ति-समता हो जाने के कारण बिस्मार्क को उदार लोगों का भय जाता रहा।

यहाँ बहुत ही उत्तम उत्तम सेना-सम्बन्धी सुधार और संशोधन होते रहे। हर एक जर्मन-वासी को तीन वर्ष तक क़वायद सीखनी

पड़ती है। केवल वे लोग जो साहित्य में अच्छी उन्नति करने के योग्य हैं एक साल फ़ौज में रक्खे जाने के बाद लिखने पढ़ने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। इस प्रकार जर्मन-देश का हर एक मनुष्य सैनिक है। १८८०-१८८८ में केवल ४,२७,२७४ फ़ौज रखने की सम्मति महासभा में दी गई। इसके उपरान्त सात वर्ष का क्रम छोड़ कर पाँच वर्ष के बाद फ़ौज की संख्या पर विचार करना स्थिर रहा। १८९३ और १८९८ में तदनुकूल फिर इस विषय पर विचार हुआ।

अनेक नहरें तैयार हो जाने के कारण यहाँ का व्यापार आज कल बड़ी उन्नति पर है। १८७० की अपेक्षा १९०० में व्यापार चौगुना अधिक हो गया। वाणिज्य-सम्बन्ध से जर्मन लोग देश देशान्तरों में फैलने लगे। आफ़्रिक़ा महाद्वीप तथा समोआ द्वीप में इन लोगों के अनेक उपनिवेश बसे। १८८४ में न्यूब्रिटेन (बाद को बिस्मार्क द्वीपसमूह) और न्यूगिनी में इन लोगों ने वास करना आरम्भ किया। बिस्मार्क का यह स्पष्ट सिद्धान्त था कि उपनिवेश और रक्षित रियासतों (Protectorates) का प्रबन्ध वहाँ के वासियों के हाथ में रहे। उपनिवेशों के कारण जर्मनी और ग्रेट-ब्रिटेन में कुछ द्वेष हो गया था। जर्मन महाराज ने उसे शान्त करके अँगरेज़ों से 'हेलिगो लैण्ड' नामक द्वीप प्राप्त किया।

सामाजिक संशोधन पर इन दिनों बड़ा विवाद हो रहा था। १८८१ में समाज-सुधार के लिए विचार-सभा ने अनेक प्रस्ताव प्रचलित किये। यह तै किया गया कि सरकार मज़दूरों की संरक्षक रहे और उन लोगों को सांहतिक समिति बनाई जावे। एवं किसा

दुर्घटना के कारण अशक्त मज़दूरों की सहायता की जावे। १८८७ में निर्वाचन (Elections) विषयक घोर आन्दोलन हुआ। सनातनी दल को हटा कर जातीय उदार लोगों के हाथ में संचालन-शक्ति थोड़े ही काल के लिए फिर आई।

मार्च १८८८ में महाराज विलियम परलोकवासी हुआ। उस का पुत्र फ़्रेडरिक तृतीय राज्य-सिंहासन पर बैठा। यह महाराज जातीय उदार लोगों का आशापात्र था। बहुत काल से वे इसके अभिषेक की राह देख रहे थे। परन्तु दुर्भाग्य वश इसका राजत्व काल केवल ९९ दिन बाद समाप्त हो गया, और जातीय उदार दल की आशा-लता पर पाला पड़ गया। १८८८ ही में फ़्रेडरिक तृतीय के पुत्र विलियम द्वितीय ने राज-आसन सुशोभित किया।

—:०:—

२९—साहित्यावस्था।

साहित्य इस समय अपनी प्रौढ़ावस्था को प्राप्त था। शिक्षा और विज्ञान की सब शाखाओं पर पुस्तकें तैयार करने वाले उत्तम उत्तम लेखक वर्तमान थे। क्या दर्शन, क्या वेदान्त और क्या उच्च कक्षा का साहित्य सब रोज़ रोज़ उन्नति कर रहे थे। शापेनहावर के दार्शनिक विचार लोगों में ख़ूब फैल रहे थे। लोज़े (Lotze १८१७-१८८१) ने अपनी गवेषणा पूर्ण "विज्ञान और अध्यात्म विद्या का निराकरण" नामक पुस्तकद्वारा दर्शन शास्त्र को परिपुष्ट किया। ई. वान. हर्टमन ने बाह्य शून्य-वाद पर एक उत्तम संग्रह मुद्रण कराया। शेफ़ेल

(Scheffel १८२६-१८८६), वेबर (१८१३-१८९४) हाइस (Hyse) आदि अनेकानेक विद्वान् बवेरिया में वर्तमान थे, जिनसे वहां के साहित्य को बड़ी सहायता मिली। रिचल (A. Ritchl) और हारनैक्स (Harnacks) वेदान्त-शास्त्र को उन्नत कर रहे थे। जी फ्राइटग (G. Freytag) ने एक अत्युत्तम इतिहास प्राचीन काल से लेकर १८४८ तक का तैयार किया। एबर्स (Ebers) और एफ० डश्न (F. Dashn) आदि उत्तम इतिहास-लेखकों में से हैं। डब्ल्यू जार्डन अपनी नवीन लेख-शैली के कारण विलक्षण था। रेङ्क (Ranke १७९५-१८८६) ने अपना बड़ा ऐतिहासिक ग्रन्थ नौ जिल्दों में छपवा कर प्रस्तुत किया। ट्राइश्क (Treitschke) के सामयिक लेखों से युवकों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता था। जर्मनी में एका पैदा करने के लिए उपन्यासों से बड़ी सहायता मिली। गुट्जकू (Gutzkow १८११-७८) रयू टर और थेयोडार स्टार्म आदि बढ़िया लेखकों में से थे। स्पीलहागन (Spielhagen) ने १९०० तक ९-१० उपन्यास तैयार कर के बहुत उपकार किया।

रिचार्ड बैग्नर ने अनेक उत्तम उत्तम नाटक लिखे हैं और १८६५ के बाद वह रंगभूमि पर खेले जाने लगे। म्यूनिच में विल्टब्रंट (Wildtbrandt) उत्तम नाटक कर्ता था। ए किंडर, बेनेडिक्स, मोज़र श्विंटन (Schonthan) उत्तम उत्तम नाटककार थे। लडविग अन्सन्-ग्र्यूबर (Ludwig Anzengruber) ने 'स्वातंत्र्य-प्रतिपादक' अनेक उत्तम नाटक तैयार किये। उत्तर जर्मनी में विल्डेन-ब्रुंस (Wildenbruch) उत्कृष्ट लेखक था। सेडान आदि युद्धों

का प्रदर्शन करते हुए इसने अनेक ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं। एच. ज़ाइडेल (H. Scidel), बुश (Busch) आदि प्रहसन-लेखक थे। एफ़. टी. विशर (F. T. Vischer १८०७—८७) की पुस्तकें खूब हँसाने वाली हैं। यहां का शृङ्गार-काव्य (Lyric) देखने से साहित्य दशा का सामयिक परिवर्तन पूरे तौर से मालूम हो सकता है। इस विषय के कई उत्कृष्ट लेखक वर्तमान थे। सुप्रसिद्ध मैक्स-मूलर साहब जैसे विद्वान् लेखक यहीं उत्पन्न हुए हैं। १८८० की अपेक्षा आज कल (१९०८) जर्मन-साहित्य बड़ी ही उच्चकक्षा को प्राप्त है। बड़े बड़े दार्शनिक और वैज्ञानिक विद्वान् आज जर्मन देश को सुशोभित कर रहे हैं। योरोप देशीय संस्कृत के अनेक विद्वान् जर्मन देश ही के हैं। भारत वर्ष के कई लुप्तप्राय ग्रन्थों को जर्मनी वालों ने छपवाया है। अनेक संस्कृत-साहित्य की पुस्तकें इस देश में वर्तमान हैं और जर्मन लोग उन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं।

३०—महाराज विलियम द्वितीय।

१८८८ से इन महाराज का राजत्व-काल प्रारम्भ होता है। इन की माता हमारे महाराज इंग्लैंडेश्वर सप्तम एडवर्ड की बहन थीं। १८९० में फिर निर्वाचन-समय आ गया। इस समय 'सोशलिस्ट, 'सेण्टर' और 'रैडिकल' लोगों की संख्या अधिक थी। मज़दूरों की दशा सुधारने के लिए महाराज ने एक घोषणापत्र निकाला। १८९० में मतभेद होने के कारण महाराज की आज्ञानुसार बिस्मार्क को

इस्तेफ़ा दाख़िल करना पड़ा। काउण्ट वान कैप्रिवी महामंत्री के पद पर आसीन हुए। बिस्मार्क के हट जाने से उनके शत्रु लोग बहुत प्रसन्न थे। कैप्रिवि के कम अनुभवशील होने के कारण महामंत्री की शक्ति का घटना और महाराज के प्रभाव का बढ़ना शुरू हुआ। अब महाराज स्वयं पूर्णरूप से शासन में योग देने लगे।

ग्रेट ब्रिटेन के साथ कुछ अनबन हो जाने और रूस तथा फ़्रांस का एका होने से जर्मनी में सेना बढ़ाने पर विचार प्रारम्भ हुआ। शिक्षा-विभाग में कुछ संशोधन किये गये। यह समझ कर कि महन्तसमुदाय की शक्ति बढ़ाने के लिए यह उद्योग हो रहा है, सर्व साधारण बहुत असन्तुष्ट हुए और यह क़ानून तोड़ दिया गया। कैप्रिवी ने अपना महामंत्रित्व पद त्याग करके 'चैन्सेलर (Chancellor) बना रहना पसन्द किया। किन्तु रईस लोगों के विरोध के कारण १८९४ में कैप्रिवी को वह पद भी त्याग करना पड़ा। सुचतुर होहेन्-लोहा (Hohenlohe) अब महामंत्री के पद पर नियुक्त किये गये। इस बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ ने अनेक सुधार किये। इस समय सनातन दल और सेण्टर समाज फिर शक्तिमान् हो रहा था। १८९४ में ज़ाब्ता फ़ौजदारी का संशोधन किया गया और नया क़ानून दीवानी १८८७ से तैयार होते होते १९०० में प्रचलित हुआ।

जर्मनी की दो चार रियासतों में अब भी न्यारे न्यारे क़ानून वर्तमान थे। वह सब समान कर दिये गये। अब एक क़ानून से समस्त देश का शासन किया जा रहा है। जलसेना (Navy) की उन्नति करने का पूर्ण विचार सरकार ने किया और उसके अनुकूल कार्-

वाई भी प्रारम्भ की गई। एल्ब नदी के मोहाने पर हैलिगोलैण्ड द्वीप में एक बन्दर (Port) खोला गया।

चीन देश में भी प्रवेश करने का विचार करके किउचाऊ की खाड़ी में जर्मन-सेना आ उतरी। एक कैथोलिक महन्त का गुप्तवध सेना उतारने का बहाना था। ५० वर्ग मील पृथ्वी का ठेका जर्मन लोगों ने ले लिया। उसमें रेल चलाने का भी अधिकार इन्हें मिल गया। हेलमेल पैदा करने के लिए, महाराज ने अपने भाई राजकुमार हेनरी को चीनराज के पास भेजा। वहां विशेष अधिकार प्राप्त कर लेने का इन्हें दृढ़ विश्वास था। परन्तु १९०४-०५ वाले रूस-जापान युद्ध में जापान का गौरव देख कर इनकी आशा कुछ ढीली पड़ गई है।

योरोप देशीय तुर्की से जर्मनी ने मैत्री पैदा की और आपस का मेल बढ़ने लगा। एक जर्मन-व्यापारी को बग़दाद तक रेल बनाने की आज्ञा भी मिल गई। १९०० में जहाज़ों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रस्ताव पेश किया गया।

१९०० में काउण्ट वान ब्यूलो (Bulow) ने 'चैन्सलर' पद सुशोभित किया।

३१—जर्मन देश की वर्तमान अवस्था।

(१९००—१९०८)

आजकल संसार की नव-शक्तियों (Modern Powers) में से जर्मनी भी एक मुख्य देश है। कुछ काल पहले इंग्लैण्ड आदि इसे इतना गौरवसम्पन्न स्थान देने में आनाकानी करते थे; परन्तु

अब अपने पुष्ट सांहतिक शासन, प्रतिभावान् राजनीतिज्ञ-समूह, बुद्धिमान् प्रबल लेखक, विस्तृत व्यापार, एवं पर्याप्त जल व स्थल-सेना के कारण समस्त संसार की प्रथम कक्षा वाली रियासतों में यह महाराज्य आदर की दृष्टि से देखा जाता है। यह देश अपनी अद्भुत विद्योन्नति के लिए और रियासतों की अपेक्षा अत्यन्त विलक्षण है। जैसे गवेषणापूर्ण और गम्भीर ग्रन्थ आज जर्मन देश में प्रकाशित होते हैं, वैसे अन्य स्थानों में बहुत कम मिलेंगे। जिस संस्कृत-भाषा को 'मुर्दा ज़बान' कह कर अनेक 'अनुभव-शील' महानुभाव उपहास किया करते हैं उसी बुड्ढी 'अधमरी भाषा' को ये लोग थोड़ा बहुत अपनाते चले आये हैं। कौन कह सकता है कि यहाँ के कालिदास, भवभूति आदि अनेकानेक महाकवियों ने जर्मनी में प्रवेश करके, वहाँ की साहित्योन्नति में कुछ सहायता दी हो? आज भी संस्कृत की अनेक पुस्तकें वहाँ उत्तम-तया प्राप्त हो सकती हैं। अनेक संस्कृत के पण्डित वहाँ आज भी वर्तमान हैं। दर्शन-शास्त्र और वेदान्त को भी इन लोगों ने अच्छी तरक्की दी है।

शासन-प्रणाली में भी इस देश ने अब भली चंगी उन्नति कर ली है। वैमनस्य उत्पन्न करने वाले वे पुराने झगड़े अब स्वप्न में भी नहीं देख पड़ते। अब एक जर्मन-देशी मनुष्य दूसरे से मित्र और प्रेम भाव के साथ हाथ मिला के अपनी जन्मभूमि के लिए रक्त बहाने को प्रस्तुत रहता है। महा-विचार-सभा में अब धीरे धीरे सरकार की शक्ति वृद्धि को प्राप्त हो रही है। १९०३ के निर्वाचन

में 'सोशलिस्ट डेमोक्रैटों'* के प्रतिनिधि ५८ से ८१ हो गये। इस घटना से सरकार को थोड़ी आशंका भी हुई।

तदनन्तर महाराज ने मन्त्रिदल के साथ अपने बल को बढ़ाना आरम्भ किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि १९०७ के निर्वाचन में उक्त दल की प्रतिनिधि-संख्या केवल ४३ रह गई है। शेष ख़ाली ३८ स्थानों में महाराज ने अपने प्रतिनिधि नियत कर दिये हैं। स्वयं क़ैसर और महामंत्री ब्यूलो इस सफलता से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। ब्यूलो ने इस समय यह भी कहा था कि "अब जर्मन सरकार काठी पर सवार हो चुकी है और धीरे धीरे अपने सब वैरियों को पराजित कर देगी"। अब यहाँ के डाक, तार, रेल, व्यापार आदि सब विभाग एक क़ानून से शासित होते हैं।

इस देश में स्थल-सेना का अत्युत्तम प्रबन्ध है। लखूखा सरकारी सेना रखने के अतिरिक्त, यहां का प्रत्येक मनुष्य सेना विभाग में कुछ काल तक काम करने के लिए वाध्य किया जाता है। इस क़ानून से किसी को भी छुटकारा नहीं मिल सकता है। २० वर्ष के बाद तीन वर्ष तक 'क़वायद' सीखकर हर एक आदमी को रक्षित (Reserve) सेना में रहना पड़ता है। इस क़ानून के वहां प्रचलित होनेसे प्रत्येक जर्मन-वासी सैनिक है और काम पड़ने पर अपने देश की रक्षा के लिए लड़ सकता है। सेना-समूह पर क़ैसर का पूर्ण अधिकार है।

उपनिवेशों (Colonies) के बसाने में जर्मन-देश कुछ पछड़ा हुआ है। परन्तु अब इस मामले में भी सरकार सचेत हुई है।

* सोशलिस्ट या सामाजिक दल के वे लोग जो ठेठ प्रजातंत्र-शासन के सर्वथा पक्षपाती हैं।

किउचाऊ में सेना भेज कर ९९ वर्ष का ठेका लेने और तुर्क देश की सरकार से मैत्री करने का उल्लेख गत अध्याय में हो चुका है। जर्मन लोगों ने ब्रेज़ील में बस कर व्यापार करना शुरू कर दिया है। दक्षिण अमेरिका के अनेक स्थानों में इन्होंने अपने वाणिज्यकेन्द्र स्थापित कर लिए हैं। जर्मनी ने स्पेन वालों से 'कैरोलाइन द्वीप' मोल ले लिया है। नीति-कौशल से क़ैसर 'समोआ' भी प्राप्त करने में सफल मनोरथ हुए हैं। 'औपनिवेशिक बल' (Colonial power) बढ़ाने के लिए यहां जलसेना (Navy) की अभिवृद्धि के अर्थ अनेक प्रयत्न सोचे गये हैं। सरकार ने बहुत सा रुपया भी इस काम के लिए मंज़ूर किया है और हज़ारों नये जहाज़ तैयार किये जा रहे हैं।

रूस-जापान-युद्ध होने के समय जर्मन-महाराज ने रूस के साथ अभिसन्धि करली थी। परन्तु अन्त में रूस के पराजित होने से इन्हें विशेष फल प्राप्त करने की प्रत्याशा न रही। हाल में फ़्रांस देश वालों ने 'मुराको' रियासत पर अपना पंजा जमाना शुरू किया है। जर्मनी ने हस्तक्षेप करने का विचार किया था, परन्तु फ़्रांस और अँग्रेज़ों के मिल जाने से इनकी दाल न गली। वर्तमान क़ैसर विलियम द्वितीय महाराज एडवर्ड सप्तम के भांजे हैं। ऐसा निकटवर्ती रिश्ता होने से परस्पर प्रेम बढ़ने की पूरी आशा है। अब इंगलैंड और जर्मनी में धीरे धीरे वैमनस्य हट रहा है। अभी हाल में क़ैसर ने इंगलैंड जाकर अपने 'मामा' के दर्शन किये थे। जर्मन महाराज बड़े सुशील और मिलनसार हैं। इस बात का पूरा विश्वास है कि इनके राजत्व-काल में जर्मनी की ख़ूब उन्नति होगी।

परिशिष्ट।

(क) घटना-अनुक्रम-सहित समस्त जर्मन महाराजों की सूची।

(नं० १ से ३ तक बी० सी० का यह अर्थ है कि अमुक अमुक घटना ईसा के जन्म के उतने साल पहले हुई।)

११३—बी० सी०-स्विट्ज़रलैण्ड की घाटी में रहने वाली वन्य जातियों ने इटली पर हमला किया।

१०५—बी० सी०-रोम देश के सेनापति मारियस ने ट्यूटन लोगों को पराजित किया।

१०२—बी० सी०-किम्बरी जाति को रोम देशवालों ने हराया।

९—ईस्वी में वीर हरमन रोम से जर्मनी को वापस आया।

४—शताब्दी में 'हन' जातीय लुटेहरों ने जर्मनदेश पर चढ़ाई की।

४५३—ईस्वी में 'हन' लोगों को जर्मनीवालों ने पराजय दी।

१—फ्रैंकवंशीय क्लोविस या लडविग (४८१—५११ ईस्वी)। इसने रोम देशवालों को अपने राज्य के बाहर निकाल दिया। परस्पर राजों में मेल बढ़ाया। कुल जर्मनी पर शासन किया।

२—मेरोविंजियन वंश के राजे (५११—७५१)। ये लोग बड़े आलसी और पेय्याश थे। वास्तविक अधिकार पेपिन हेरिस्टाल इत्यादि बड़े रईसों के हाथ में था।

३—पेपिन हेरिस्टाल		
४—चार्ल्स मार्टेल		७५१—७६८
५—पेपिन दि शार्ट		

ये लोग अपनी योग्यता के कारण 'मेरोविंजियन' राजाओं को क़ाबू में रखते और उन्हें 'कठपुतली' को भांति नचाते थे। राज्य-शासन भार इन्हीं लोगों के ऊपर था।

६—शार्लमेन (७६८—८१४)। अत्यन्त पराक्रमी, सुयोग्य, चतुर और प्रजाप्रिय था। कुल ५३ लड़ाइयों में योग दिया। विचारसभा (पार्लामेण्ट) का संगठन बनाया। गिर्जाघर-प्रथाओं में सुधार किया। जर्मन-देश की उन्नति की।

७—लुई (८१४—८४०)। नालायक़ राजा, बड़े रईसों ने और स्वयं इसके पुत्रों ने बग़ावत की।

८—पुत्र लुई		
९—चार्ल्स दि फैट		
१०—अर्नल्फ़		८४०—९११
११—चार्ल्स दि चाइल्ड		
१२—लुई बालक		

प्रायः ये सब अयोग्य थे और शासन करना नहीं जानते थे। राजकीय शक्ति का ह्रास और बड़े रईसों के बल का अभ्युदय इनके समय में शुरू हुआ। ८४१ में फान्टेन्वा का संग्राम और वर्डून की सन्धि।

१३—कानरड प्रथम (९११—९१९) छोटे बड़े रईस गोलमाल कर रहे थे। एक प्रकार की अशान्ति सारे देश में फैली थी।

१४—हेनरी दि फ़ाउलर (९१९—९३६)। सुयोग्य और राजनीतिज्ञ।

'हंगरी' प्रदेश के लुटेरों को पददलित किया। अनेक गढ़ बनवाये। मर्सवर्ग की लड़ाई। 'नाइट' पद खोलागया। शान्ति-स्थापन।

१५—आटो प्रथम
१६—आटो द्वितीय
१७—आटो तृतीय
१८—दो चार और राजे
१९—हेनरी दि सेण्ट
} ९३६—१०५३

आटो प्रथम चतुर था। इसने रईसों में मेल बढ़ाया। इंग्लैण्डेश्वर एडमण्ड की पुत्री एडिथ के साथ विवाह किया। १०५३ तक कोई घटना विशेष नहीं हुई।

२०—कानरड द्वितीय
२१—हेनरी तृतीय
२२—हेनरी चतुर्थ
} १०५३—१०९९

द्वितीय कानरड और तृतीय हेनरी दोनों अच्छे नीतिज्ञ थे। इन्होंने अच्छा शासन किया।

हेनरी चतुर्थ में उतनी योग्यता नहीं थी। महन्तों का बल बढ़ा हुआ था। कोलोन और मेंज़ के महन्तों में बड़ी लड़ाई हुई। पोप से भी राजा से वैर हो गया। इसे बहुत तकलीफ़ें उठानी पड़ीं।

२३—हेनरी पंचम (१०९९—११२५)। पोप से झगड़ा। राजकीय शक्ति का ह्रास।

२४—सैक्सन लाटेयर ... ... ११२५—११३८

निर्बल राजा। स्वाबिया के फ़्रेडरिक और फ़्रैंकोनिया के कानरड में महाघोर युद्ध। लाटेयर कुछ भी नहीं बोल सकता था।

२५—कानरड तृतीय ... ... ११३८—११५२

११४७ में क्रूसेड में योग दिया। राजत्व काल भर इसे अपने भाई 'वेल्फ़' से लड़ते रहना पड़ा।

२६—फ्रेडरिक प्रथम या बारबरोसा ... ११५२—११९०

'वर्जवर्ग' में सामन्त राजाओं ने अधीनता स्वीकार की। पांच बार इटली पर चढ़ाई की। मिस्र देश पर आक्रमण किया। तृतीय 'क्रूसेड' युद्ध में योग दिया। लड़ाका रईसों को शान्त करने का प्रयत्न किया।

२७ हेनरी षष्ठ ... ... ११९०—११९८

पालरमो का भयानक हत्या-काण्ड।

२८—फ्रेडरिक तथा और राजे (अन्तिम 'पॅंज़ियो') ११९८—१२७३

अन्तरङ्ग और बहिरंग लड़ाइयों के कारण अशान्ति। पोप से पूरा झगड़ा और महाराज के ऊपर उन्हीं का पूर्ण प्रभाव। नाममात्र महाराज पद रह गया था। निर्वाचक दल की शक्ति का अभ्युदय।

२९— हैप्सवर्ग का रडल्फ़ ... १२७३—१२९२

३०— नासो का अडाल्फ़स ... १२९२—१२९८

३१— अलबर्ट प्रथम ... ... १२९८—१३०८

३२— लक्समबर्ग का हेनरी सप्तम ... १३०८—१३१४

इन सब के समय में राजकीय वंशों में बड़ी लड़ाई रही।

३३—बवेरिया का लुडविग... ... १३१४—१३४७

पारस्परिक युद्ध। पोप इसे राज्यासन से उतारने की आज्ञा देता है। निर्वाचकवृन्द उससे इनकार करता है। लोगों में देश-प्रेम की अधिकता।

३४—लक्सेम्बर्ग का चार्ल्स चतुर्थ और 'गन्थर' (१३४७—१३७८)

चार्ल्स के राज्यासन पर बैठते ही लोग बग़ावत करते हैं। चार्ल्स को भागना पड़ता है और गन्थर का निर्वाचन। 'गोलडेनबुल' का निश्चित होना।

३५—वेनसेस्लस ...
३६—रूपर्ट ... ... १३७८—१४३८
३७—सिजिस्मण्ड ...

१४१२ में 'हसाइट' संग्राम।

३८—अलबर्ट द्वितीय ... ... १४३८—१४४०

तुर्क लोगों के साथ लड़ाई में मारा गया।

३९—फ़्रेडरिक तृतीय ... ... १४४०—१४९३

अपना राज्य बढ़ाने के अर्थ यत्नवान् रहा। झगड़ों को शान्त किया।

४०—मैक्समिलान प्रथम ... ... १४९३—१५१८

बड़ा राजनीतिकुशल। देश की बड़ी उन्नति की। अशान्ति को हटा कर प्रजा पालन किया। मार्टिन ल्यूथर के अभ्युदय का प्रारम्भ (१५१७)

४१—चार्ल्स पंचम ... ... १५१८—१५५५

वर्म्स की विचारसभा में ल्यूथर को बुलाकर दण्ड की आज्ञा देना (१५२१)। नरेम्बर्ग और स्पायर की विचार-सभा। १५३० में आग्सबर्ग की विचार-सभा। पोप से खटपट।

४२—फ़र्डीनेण्ड प्रथम ... ... १५५६—१५६४

ट्रेण्ट में सभा करके कैथोलिक धर्म की रक्षा करने का विचार।

४३—मैक्समिलान द्वितीय ... ... १५६४—१५७६

बोहेमिया के प्रोटेस्टैण्टों पर कुछ कृपा की गई।

४४—रडल्फ़ द्वितीय ... ... १५७६—१६१२

'ल्यूथर' और अन्य मत वालों से विरोध। आस्ट्रिया में प्रोटेस्टेण्टों पर कुछ सख़्ती। १६०८ में रैटिस्बान की सभा और ल्यूथरेन पन्थ वालों की प्रार्थना।

४५—मैटियास ... ... १६१२—१६१९

४६—फ़र्डीनेण्ड द्वितीय ... ... १६१९—१६३७

४७—फ़र्डीनेण्ड तृतीय ... ... १६३७—१६५७

(१६१८—४८) प्रचण्ड तीस वर्ष का युद्ध। मैन्सफ़ील्ड और वालेन्स्टीन की वीरता। १६३५ में प्रेग की अभिसन्धि। (Wehlau) वेला की सन्धि से ब्रंडेनबर्ग के बड़े निर्वाचक को स्वाधीनता मिली।

४८—लैयोपल्ड प्रथम ... ... १६५८—१७०५

फ़्रांस वालों से कुछ छेड़छाड़। तुर्क लोगों के साथ सन्धिपत्र। १७०१ में ब्रैण्डेनबर्ग का निर्वाचक 'फ़्रेडरिक प्रथम' नाम से प्रशिया का राजा हुवा। मार्लबरा और यूजेन ने फ़्रांस के लोगों को पराजित किया।

४९—जोज़ेफ़ प्रथम ... ... १७०५—१७११

५०—चार्ल्स षष्ठ ... ... १७११—१७४२

रैमिलीज़, ऊडेनार्ड और मालप्लेका के युद्ध। यूट्रेक्ट की सन्धि। १७१३ में 'फ़्रेडरिक विलियम प्रथम' प्रशिया का राजा हुआ।

'प्रैग्मेटिक सैंक्शन'। १७४० में फ़्रेडरिक (द्वितीय) दि ग्रेट ने प्रशिया का राज्यासन सुशोभित किया। मैरिया थेरेसा १७४० में आस्ट्रिया की महारानी हुई।

५१—चार्ल्स सप्तम ... ... १७४२—१७४५

५२—फ़्रैंसिस प्रथम ... ... १७४५—१७६५

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा और अन्तरंग विरोध १७४८ में एला-शैपेल का सन्धि-पत्र।

५३—जोज़ेफ़ द्वितीय ... ... १७६५—१७९०

१७८१ में 'टालरैंस एडिक्' द्वारा प्रोटेस्टैण्ट कैथोलिक इत्यादि सब पन्थों को समान अधिकार दिये गये। १७८६ में फ़्रेडरिक विलियम द्वितीय प्रशिया का राजा बनाया गया। फ़्रांस देशीय घोर विप्लव का आरम्भ।

५४—लैओपाल्ड द्वितीय ... ... १७९०—१७९२

५५—फ़्रैंसिस द्वितीय ... ... १७९२—१८४७

फ़्रांस देशीय विप्लव का घोरतर रूप। देश ही में निर्वाचक-वृन्द की आपस में फूट। नेपोलियन से अनेक संग्राम। १७९७ में फ़्रेडरिक विलियम तृतीय प्रशिया के राज्य पद पर आरूढ़ हुवा। १८०६ में महाराज ने व्याकुल होकर जर्मनी के 'महाराज' का पद त्याग कर दिया और केवल आस्टिया के राजा विख्यात हुए।

१८०७ में रूस और प्रशिया तथा नेपोलियन में परिणाम-रहित संग्राम।

१८०९—बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया वालों ने 'फ्रेंच' सेना को पराजित किया।

१८१०—प्रशिया में शिक्षाप्रचार, नव प्रथानुकूल किया गया।

१८११—प्रशिया में व्यापार-स्वातंत्र्य स्थापन।

१८१२—प्रशिया से यहूदी लोग मुक्त कर दिये गये। नेपोलियन के साथ सन्धि।

१८१३—प्रशियाराज और नेपोलियन से संग्राम।

१८१४—फ्रांसवालों की पराजय. ब्लूचर की वीरता। बोनापार्ट पल्बा में क़ैद किया गया।

१८१५—विख्यात वाटर्लू युद्ध। जर्मनी ३९ रियासतों की एक संहति बनाई गई।

१८१८—अनेक सूबों में संगठन स्थापन किया गया।

१८२२—प्रशिया के मंत्री होर्डनबर्ग की मृत्यु, राजा स्वयं चैंसलर पद ले लेता है।

१८२८—ज़ोलवेरेन या एक समान चुंगी का सब देश में प्रचार।

१८३०—बवेरिया में विप्लव की आशंका।

१८३१—सैक्सनी में शासन-संगठन का आरम्भ।

१८३२—जर्मनी भर में विप्लव और उसके रोकने के लिए उपाय।

(५६)—फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ। १८४०-१८६१

१८४०—फ़्रेडरिक विलियम चतुर्थ प्रशिया के राज सिंहासन पर बैठा।

१८४७—यह निश्चित हुआ कि विचार सभा कुछ ख़ास कामों के लिए, और थोड़े मनुष्यों की कमेटी चार वर्ष में एक बार एकत्र हुआ करे।

१८४८—फ़्रांस का विप्लव देख कर यहाँ भी बलवा के लक्षण, बड़े परिश्रम के साथ और विप्लवकारियों की अनेक बातें स्वीकार करने पर विभ्राट् शान्त हुआ।

१८४९—शेल्सविग- होल्स्टेन के वास्ते संग्राम।

१८५०—कुल जर्मनी देश की एक विचार सभा एर्फ़र्ट में एकत्र हुई।

१८५१—पुरानी जर्मन संहति का पुनः स्थापन।

(५७)—विलियम प्रथम। १८६१-१८८८

१८६१—विलियम प्रथम प्रशिया का राजा हुआ।

१८६२—बिस्मार्क के मंत्रित्व का प्रारम्भ।

१८६४—वाइना की सन्धि से शेल्सविग हाल्सटेन प्रशिया को मिले। फ़्रांस से व्यापार अभिसन्धि।

१८७०—फ़्रांस के साथ दो वर्ष तक महा घोरसंग्राम।

१८७१—फ़्रैंकफ़र्ट की सन्धि से युद्ध समाप्त हुआ और प्रशिया के राजा को 'जर्मनी के महाराज' की पदवी मिली।

१८८१—प्रशिया का 'मे ला' (May Law) ठीक तौर से प्रचलित हुआ।

१८८४—जर्मन उपनिवेश सभा का स्थापन।

१८८६—ज़ंज़ेबार के विषय में इंग्लैण्डेश्वर से सन्धि।

(५८)—फ़्रेडरिक तृतीय। १८८८

१८८८—महाराज की मृत्यु होने पर फ़्रेडरिक तृतीय सिंहासन पर बैठा। कुछ काल बादही इसकी मृत्यु होने पर विलियम द्वितीय ने सिंहासन सुशोभित किया। आपही जर्मनदेश के वर्तमान महाराज हैं।

(५९)—महाराज विलियम द्वितीय। १८८८—

पूर्वी अफ़्रिका में विभ्राट्, उसे रोकने के लिए इंग्लेण्ड से 'इक़रारनामा,। समोआ के शान्त रहने के बारे में १८८९ में जर्मनी, युनाइटेडस्टेट्स अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि से 'बरलिन-सन्धि'।

१८९०—बिस्मार्क नौकरी से बरख़ास्त किये गये। जर्मनी को हेलीगो-लैण्ड मिला।

१८९८—कीउचाउ जर्मनी के संरक्षण में आया।

१८९९—बैंकों से नया इक़रारनामा १९०७ तक के लिए लिखाया गया।

१९००—होहेनलोहे के 'चंसेलर' पद की समाप्ति पर काउंट वान व्यूलो ने वह पद सुशोभित किया।

१९०४—जर्मनी में 'जेसुइट' लोगों के बसने की मनादी हटा दी गई।

१९०५—मोराको के लिए फ़्रांस से खटपट।

१९०७—महाराजकीय पक्ष की प्रतिपोषक विचार सभा का निर्वाचन।

—:०:—

(ख) प्रशिया के 'राजा व जर्मन महाराजों' की नामावलि।

(१) प्रशिया के राजा।

१—फ्रेडरिक प्रथम ... ... १७०१—१७१३,

२—फ्रेडरिक विलियम प्रथम ... ... १७१३—१७४०

३—फ्रेडरिक (द्वितीय) दि ग्रेट ... ... १७४०—१७८६

४—फ्रेडरिक विलियम द्वितीय ... ... १७८६—१७९७

५—फ्रेडरिक विलियम तृतीय ... ... १७९७—१८४०

६—फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ ... ... १८४०—१८६०

७—विलियम प्रथम ... ... १८६०—१८७०

—:०:—

(२) जर्मनी के महाराज

विलियम प्रथम १८७१—१८८८

८ फ्रेडरिक १८८८ (कई मास तक)

९—विलियम द्वितीय १८८८ से—(वर्तमान)

—:०:—

(ग) जर्मनी के मुख्य संग्राम।

१०५ बी. सी, प। रोम देशवालों ने 'ट्यूटन' जाति को पराजय दिया।

४५३ ईसवी में जर्मन लोगों ने 'हन' जातीय लुटेरों को हराया।

८४१ „ फ़ान्टन्वा में राज्य विभाग के लिए लुई के चार पुत्रों में झगड़ा हुआ। 'लाटेयर' को महाराज पद मिला और सब को गुज़ारा व कुछ भूमि मिली।

९२९ „ मर्सवर्ग में हेनरो फ़ाउलर ने 'हन' लुटेरों का विध्वंस किया।

१२४१ „ पल्वा में ऐंज़ियो ने पोप को पराजित किया।

१२९८ „ गोलहेम (Gollheim) में अल्बर्ट प्रथम ने नासो के अडालफ़स को मार डाला।

१३०७ „ लका (Lucka) में, थरिंजियन, (जर्मन देशान्तर्गत थरिंजिया सूबे के वासो) राजकुमारों ने अल्बर्ट प्रथम को हरा कर कुछ स्वत्व प्राप्त किये।

१४१२ „ हसाइट युद्ध का प्रारम्भ।

१४१९ „ में हसाइट सेना प्रेग के क़िले पर अधिकार करती है।

१४३१ „ 'टास' (Taus) में हसाइट सेना महाराज की फ़ौज पर जय प्राप्त करती है।

१४४८ „ कोसावो (Kosovo) में हनीडे, (बोहेमिया का गवर्नर) तुर्क लोगों को हराता है।

१४५६ „ 'वेलग्रेड' में तुर्क जाति फिर हारती है।

१६१८–४८ „ धार्मिक विवाद के कारण ३० वर्ष का घोर संग्राम

१६२० „ प्रेग में कैथोलिक लोग प्रोटेस्टैंट दल पर विजय प्राप्त करते हैं।

१६३४ ,, नार्टलिंगेन में हंगरी का राजा फ़र्डीनेण्ड प्रोटेस्टैंट सेना को हराता है।

१७०२—१७१३ ईसवी में स्पेन के उत्तराधिकार पर लड़ाई।

१७०४ ,, ब्लेनहिम
१७०६ ,, रेमिलीज़
१७०८ ,, ऊडेनार्ड
१७०९ ,, मालप्लेका
इन सब स्थानों में इंग्लैण्ड व प्रशिया की सम्मिलित सेना स्पेन और फ़्रांस वालों को पराजित करती है।

१७८८—१८१५ ईसवी में फ़्रांस का घोर विप्लव।

१७९६ ,, मान्टेनट (Montenotte) में नेपोलियन आस्टिया की सेना को हराता है।

१८०७ ,, एला (Eylau) में रशा और प्रशिया तथा नेपोलियन से परिणामरहित लड़ाई।

१८०९ ,, ऐसपर्न में आर्कड्यूक चार्ल्स ने नेपोलियन को हराया।

१८१० ,, वालबक में जर्मन देश वाले नेपोलियन को पराजय देते हैं।

१८१३ ,, लिपज़िक में जर्मनी, इंगलैण्ड और रूस देश की सम्मिलित सेना नेपोलियन को हराकर क़ैद कर लेती है।

१८१५ „ वाटर्लू में बोनापार्ट को पूर्णतया पराजय देकर जर्मनी और इंगलैण्ड सदा के लिए सेंट-हेलेना द्वीप में उसे क़ैद कर देते हैं।

१८६६ „ कैनिशग्रट्ज़ में शेल्सविगहाल्सटन के लिए लड़ते समय प्रशिया ने आस्ट्रिया को पराजित किया।

१८७०—७१ फ़्रांस-जर्मनी से महाघोर युद्ध।

वर्थ स्पीकेरेन कालंबे सेडान मेज़	इन स्थानों में जर्मन लोगों ने फ़्रांस वालों को हराया।

—:०:—

(घ) जर्मन देश के विख्यात सन्धिपत्र।

८४१ ईस्वी में वर्डन की सन्धि से लुई के ४ पुत्रों में राज्य बँटा। लाटेयर को महाराजत्व मिला, और लड़कों को अनेक सूबे मिले।

१५२६ ईसवी में मैडरिड का सन्धिपत्र। इसके द्वारा स्पेन का फ़्रैंसिस, मिलान और नेद्धरलैण्ड पर अपना हक़ त्याग देता है। बर्गण्डी जर्मन नरेश चार्ल्स को मिलती है।

१६३५ „ प्रेग की सन्धि। जर्मन महाराज और सैक्सनी के बीच, कुछ धार्मिक प्रस्तावों का निश्चय होता है।

१६४८ ,, वेस्टेफ़ेलिया। इससे ३० वर्ष का विकट संग्राम समाप्त हुआ और महाराजकीय स्वत्व कुछ कम होगये।

१७१४ ,, 'रास्टाट' और बेडेन की सन्धि के अनुकूल फ़्रांस राज को जर्मन महाराज के लिए नेप्ल्स, मिलान, सार्डिनिया आदि देने पड़े।

१७४२ ,, ब्रेस्ला। आस्ट्रिया को प्रशिया के वास्ते सिलेसिया देदेना पड़ी।

१७४८ ,, एलाशेपेल। इंगलैंड, फ़्रांस, स्पेन, और जर्मनी के बीच आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा शान्त हुआ।

१७९७ ,, कैम्पोफ़ोर्मियो। बोनापार्ट को आस्ट्रिया का पश्चिमी किनारा मिला।

१८०७ ,, लूनेवाइल। आस्ट्रिया को नेपोलियन के वास्ते टस्केनी दे देनी पड़ी।

१८६४ ,, वाइना। प्रशिया को शेल्सविग-हाल्स्टन डेनमार्क से मिले।

१८७१ ,, फ़्रैंकफ़र्ट। इससे विकट फ़्रांस-जर्मन-संग्राम समाप्त हुआ, और प्रशिया को लोरेन, मेज़, और आल्सेस मिले। फ़्रांस को बहुत सा रुपया देना पड़ा।

१८९१ ,, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली के बीच सन्धि, वाणिज्य विषयक 'स्वीकारपत्र'।

१९०० „ बरलिन का सन्धिपत्र। समोआ-सम्बन्धी इक़रार-नामा टूट गया और जर्मनी को कुछ द्वीप मिले।

१९०२ „ १८९१ वाली वाणिज्य-सन्धि १९१५ तक के वास्ते फिर निश्चित हुई।

१९०४ „ रूस-जापान-युद्ध प्रारम्भ होने पर जर्मनी ने रूस राज के साथ मैत्री-पत्र पर दस्तख़त किये।

—:०:—

(ङ) जर्मनी के महापुरुष और स्त्री।

(१) सेनापति, मंत्री, मतसंशोधक इत्यादि।

१—वीर हेरमन, जर्मन-उद्धार-कर्ता। ९ ईस्वी में इसी ने स्वदेश को रोम वालों के पंजे से छुड़ाया।

२—मार्टिन ल्यूथर (१४८३–१५४६) बड़ा विद्वान्। प्रोटेस्टैण्ट मत का जन्मदाता।

३—मेलांकटन—ल्यूथर का शिष्य और उसी का समकालीन।

४—मैन्सफ़ील्ड—३० वर्ष वाले युद्ध में प्रोटेस्टैण्ट दल का नेता।

५—अलबर्ट वान वालेंस्टीन—३० वर्ष वाले युद्ध में राजा की ओर से वीरता के साथ लड़ा। परन्तु क्रूर और बड़ा स्वार्थी था।

६—फ़्रेडरिक दि ग्रेट (१७४०—८६) प्रशिया का अत्यन्त योग्य और उदार राजा।

७—मैरिया थेरेसा—बड़ी सुयोग्य और चतुर महारानी। इसी के

लिए आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का झगड़ा १७४० से १७४८ तक हुआ।

८—आर्क ड्यूक चार्ल्स। फ्रांस-विप्लव के संग्रामों में जर्मन सेनापति। अत्यन्त पराक्रमी और शूर।

९—ब्लूचर (१७४२—१८१९) विख्यात वाटर्लू (१८१५) संग्राम का विजेता। महापराक्रमी जर्मन-सेनापति।

१०—स्टीनमेज़ शूरवीर। (१८७०—७१) के फ़्रांस-जर्मन युद्ध में जर्मनी का सेनापति।

११—बिस्मार्क वीर और सुचतुर राजनीतिज्ञ (१८६२—१८९० तक) जर्मनी का महामंत्री।

१२—कौंट (अब प्रिंस) वान ब्यूलो (१९००) वर्त्तमान जर्मन महामंत्री।

२—प्रसिद्ध दार्शनिक, विद्वान्, लेखक इत्यादि।

११२५ से १२७३ तक नीचे लिखे हुए उत्तम कवि हुए।

१—हर्टमन वान आ (Aue)।

२—वर्न्ट वान ग्रैफ़ेन्वर्ग।

ये दो पुराने ढर्रे के कवि थे। इन्हों ने (Arthur's Round Table) (राजा अर्थर की गोल मेज़) पर जर्मन भाषा में कविता की है।

३—वलफ़्रम।

४—गाटफ़्रेड।

ये अच्छे कथा-लेखक हो गये हैं। होली ग्रेल 'Holy Grail' का उत्तम वर्णन इन लोगों ने किया है।

५—नरेम्बर्ग का हैंस सैक्स (१५५०) यह ल्यूथर के सिद्धान्तों के छन्द बनाता था।

---

१८ वीं शताब्दी के लेखक।

६—काल्पस्टक (१७२४—१८०३) जर्मनी का 'होमर'। इसकी बनाई 'मेसियाह' (Messiah) नामक पुस्तक 'मिल्टन' के 'पैराडाइज़ लास्ट' के समान है।

७—हर्डर (१७४४ से १८०३) कवि, । दार्शनिक रूसो' को अपना आचार्य्य मानता था।

८—गेटी (१७४९—१८३२) जर्मनी का 'शेक्सपियर'। अनेकानेक नाटक लिखे। कई उपन्यास भी बनाये। बड़ा बुद्धिमान् और चतुर लेखक था (कालिदास जी का बड़ा भक्त था)।

९—शिलर (१७५९—१८०५) इसकी अन्तिम पुस्तक 'विलिअम टेल' बहुत विख्यात है।

१०—इम्मैन्यूयेल कैण्ट (१७२४—१८०४) वेदान्ती, दार्शनिक और गणितशास्त्री। ह्यूम' (इंगलैंड के दार्शनिक) के लेख पढ़कर कैण्ट ने 'आत्मा' की गवेषणा शुरू की।

११—शेलिंग (१७८०—१८२१) दार्शनिक और धर्मोपदेष्टा।

१२—हेगेल

१३—अर्थर शापेन हवर

ये भी उक्त महापुरुषों के प्रायः समकालीन और अद्वैत दार्शनिक थे।

१४—बीथोवेन (१७७०—१८२७) गायनाचार्य्य और जर्मनी का 'सूरदास'। इसने वहाँ के संगीतशास्त्र को संगठित और नियमित किया।

१५—मोज़ार्ट (१७५६—१७९१) प्रथम कक्षा का संगीतशास्त्री।

१९ वीं शताब्दी के विद्वान्।

१६—लोज़े (१८१७—१८८१) शापेन हावर के विचारों का विस्तारक और अनेक दार्शनिक पुस्तकों का लेखक।

१७—वेबर (१८१३—१८९४) इसने संस्कृत के अनेक ग्रन्थों की समालोचना की है। बड़ा विद्वान् था पर भूला भी बहुत है

१८—रैङ्क (१७९५—१८८६) इतिहास-लेखक।

१९—रिचार्ड वेग्नर (प्रायः ऊपर वालों का समकालीन) उत्तम नाटककार।

२०—अडाल्फ़ एर्मन
२१—आडल्फ़िहार्नैक
२२—आर कोज़र

ये जर्मनी के वर्त्तमान विख्यात इतिहास-लेखक हैं।

२३—प्रो॰ मैक्समूलर। प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ, भाषा-तत्त्ववेत्ता और दार्शनिक। अभी थोड़े ही दिन हुए मृत हुआ। बड़ा नामी लेखक था।

(च) वर्णानुक्रम से विशिष्ट नामों की तालिका और हिन्दी में उनके उच्चारण।

शुद्धाशुद्धपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
मुखपत्र	१	Primer	Primers
)॥।	९	को	के
=)॥	४†	की	के
२१	६†	बहर	बाहर
३१	१०	निभयता	निर्भयता
३७	१	था	थी
४३	१	था	थी
,,	५†	१७९८	१७८९
५५	४†	का	को
५९	६	प्रबध	प्रबंध
६२	२†	शासन सम्बन्धा	शासन सम्बन्धो
६५	८	जाताय	जातीय
,,	७†	उद्दश्य	उद्देश्य
६६	७†	पटरा	पटरी
६८	१	ब्राण्ड	ब्राण्डी
६९	१†	किसा	किसी
७०	१०	का	की
७३	३	कैंम्प्रिवि	कैम्प्रिवी
७९	४	अपना	अपनो
८४	४†	आास्टिया	आस्ट्रिया
८५	१	फ़ॅच	फ़्रेंच
९९	३	Fonteny	Fontenoy
,,	६	फ़ॅकस्टीन	फ़्रैंकस्टोन
१०२	४†	र्युटर	रयूटर

* इनमें कुछ अशुद्धियां टाइप के साफ़ न उठने, और अधिकतर छपते समय टाइप के टूट जाने, के कारण हुई हैं। सम्भव है, कुछ प्रतियों में टाइप ठीक उठ आयां हो। तथापि यहाँ पर इन सबका लिख देना हम आवश्यक समझते हैं।

† इन पंक्तियों की गिनती नीचे से करनी चाहिए।